भोजपुरी

॥ शरद ॥

[रामनाथ पाठक 'प्रणयी']

आइल शरद सुहावन सजनी !

आइल शरद सुहाव

साफ भइल आकाश, कास-कुश फूटल, कुमुद फुलाइ
उचटल नींद, रात के सपना होत परात भुलाइ
चमक रहल झक-झक पानी में चम-चम चान लुभाव

आइल शरद सुहावन

शीतल मधुर बयार चलल झिर-झिर रस से मद-मात
उठल उमंग अंग-अंग, गोरी के गोर देह-तरु पात
खेत-बधार-आर पर अजगुत चढ़ल रूप मन-भावन

आइल शरद सुहावन

आज प्यार के गली-गली में पायल बाजल छम-छ
अलग-अलग माटी, परान बा एके, एके तू-ह
आज बाढ़ कहवाँ भादो के, कहवाँ रिमझिम साव

आइल शरद सुहाव

संपादक-मंडल—
आचार्य श्री शिवपूजन सहाय
महापंडित राहुल सांकृत्यायन
श्री बलदेव उपाध्याय
डा० उदयनारायण तिवारी
डा० विश्वनाथ प्रसाद
डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
श्री त्रिवेणी प्रसाद
श्री रघुवंशनारायण सिंह

एकर ॥)
सालभर के ५)

सूचि

	विसय	लेखक	पन्ना
१	भोर	श्री पाण्डेय सुरेन्द्र — — —	१
२	आखिरी रात	श्री रामेश्वर सिंह काश्यप — — —	२
३	सखी मत आ लछिमी सखी	श्री श्यामदेव प्रसाद सिंह — — —	३
४	भूमिदान यज्ञ	श्री राम प्रीत शर्म्मा 'प्रियतम' — —	८
५	पिआसि	श्री मदन मोहन कुँवर बी. ए. — —	९
६	इनकी पहचान कह है	डा० हरदेव बाहरी एम. ए. पी. एच. डी. — —	११
७	महात्मा गान्धी	श्री भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' — —	१३
८	लाहौर से कोना तक के दउड़	एक हवाबाज सिपाही — — —	१३
९	गीत	श्री गणपति पाण्डेय 'संकेत' — —	१६
१०	मट्टी क करतन	श्री सरोजेश — — —	१७
११	भोजपुरी कहाउत	श्री परमेश्वरी लाल गुप्त एम. — —	१८
१२	समालोचना —	— — — — —	१८
१३	जइसन देवता ओइसन पूजा	श्री वीरेन्द्र किशोर सिन्हा बी. ए. — —	२१
१४	बोरो	अनु० श्री रघुवंश नारायण सिंह — —	२६
१५	किसान	श्री मदन— — — —	३०
१६	ओझइत	श्री व्रजनन्दन सहाय — — —	३१
१७	गोड़ के धोवन	श्री विप्रजी' कमला प्रसाद मिश्र — —	३३
१८	आशा	श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' — —	३५
१९	गीत	श्री राम बचन लाल बी. ए. — —	३६
२०	भोजपुरी बोंग	लठैत विशारद — —	३७
२१	आपन बात —	— — —	३९

भोजपुरी समिति

भोजपुरी भासा में 'भोजपुरी पतिरिका के जरूरत समुझ के आरे के बाल-हिन्दी-पुस्तकालय भोजपुरी के ठीक से चलावे आ ओकर अवरू साहित्त के उजागर करे खातिर नीचे लिखल लोग के एगो 'भोजपुरी' समिति बनवलस।

श्री रामायण प्रसाद, सभापति, श्री अब्दुल कयूम अनसारी आ श्री व्रजकिशोर बहादुर उप-सभापति श्री पूर्णेन्दु प्रकाश गांगुली, प्रधान मंत्री श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' आ श्री बच्चन प्रसाद सिंह, मंत्री, श्री भगवत प्रसाद, कोषाध्यक्ष, श्री रघुवंश नारायण सिंह, सम्पादक, श्री अलगू राय शास्त्री, एम. पी. सभापति, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमिटी, श्री तारकेश्वर पाण्डेय, एम. पी. मंत्री उ० प्र० कां० क०, श्री डाक्टर रामविचार पाण्डेय, श्री डा० कृष्णदेव उपाध्याय; एम. ए० पी. एच. डी. बाबा राघव दास, श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, प्रि० बड़ागाँव, बनारस, प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिंह, श्री महेन्द्र शास्त्री, श्री शुकदेव नारायण, डाक्टर रघुवर दयाल श्रीवास्तव, श्री नरेन्द्र कुमार जैन, पं० मुक्तिनाथ मिश्र, श्री भुवनेश्वर प्रसाद 'भानु' श्री रामेश्वर तिवारी, श्रीगणेश चौबे, चम्पारण, श्री शिव प्रसाद सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com

बरिस २, खंड ३।

आरा, कु० तु० सं० ३३०
संम्बत २०१० सन् १९५३
सं०— श्रीरघुवंशनारायण सिंह

अंक ३ पूर्णांक १५

भोर

[पांडेय सुरेन्द्र]

आसमनवाँ पर ललकी अँचरिया डोले हो।
घासावा के पातावा पर
रातावा के लोरवा चमकि चलेला।
छतिया में फूलवा के सूतल
सनेहिया दमकि चलेला।
ऊ जे फूलवा के चढ़ल उमिरिया बोले हो॥
पोखरी के पनियाँ में हलुके
लहरवा लहरि चलेला।
किरन के सँगवा से दिल
आउर देहिया सिहरि चलेला।
पनघटवा पर ललकि चुनरिया डोले हो॥
चकवा त खुश भइल
आउरू चकइया निहाल होखेले।
सुगना के दिलवा धड़कि जाला
सुगनी बेहाल होखेले।
चिरइया चह-चह खोंतवा के मुँहवा खोले हो॥
भोरवा के लाल लाल गाल
समइया पा उदास होखेला।
सूरूज के चढ़त जवनियाँ
बिहँसि के निहाल होखेला।
केहु के अँखिया पर चढ़त जवनियाँ बोले हो।

www.bhojpurisahityangan.com

आखिरी रात

[तीसरा अंक से आगे]

[रामेश्वर सिंह काश्यप]

(आदमियत के गाड़ी बहुत पुराना जबाना से चलत आवत बा, तबे से, जब आदमी आदमी बनल, ओकरा में विवेक आइल, सत के असत से, नीमन के जबून से छिनगावे के समुझ आइल। वेद लिखाइल, समाज बनल, जिनगी के रहता पर धरम के दिया जरे लागल आ ओकरा अँजोर में ई गाड़ी—आदमियत के गाड़ी—सरपट बढ़े चलल। आजो ई गाड़ी कसहूँ ढहत ढिमिलात चलिए रहल बा।

आज एह गाड़ी में कइसन महापुरुख लोग सवार बा? उनका मन में का बा? उनकर रूपरंग कइसन बा? एकरे बरनन एह कविता में कइल गइल बा।

'आखिरी रात' लेखक के 'आदि-अंत' नाँव के प्रबंध-काव्य के आखिरी सर्ग ह। 'आखिरी रात' के कुछ टुकड़ा भोजपुरी में छप चुकल बा। एह अंक से फिर टूटल कड़ी जोड़ात बा।) —संपादक

.....आ
सभ के बीचो-बीच
बिराजत बाटे सोना के ढेरी
पूरा ऊँचा जगमग-जगमग,
जेकरा पर सभके आँख गड़ल,
पल भर खातिर
टकसत नइखे;
जइसे कि गिद्ध निहारेला
कवनो लहास के
टुकुर-टुकुर।
सभ केहू आपन दाँव
सोच के रह जाता,
सब के मन में बा भँवर उठत
लालच तन के हिलकोरत बा,
इरखा दिमाग झकझोरत बा,
मथ-मथ जाता मनसा के
सोना के ढेरी।
सभ के चित में बा चोर—
लुटेरा हत्यारा
जे चमक उठत बा रह-रह के
आँखिन से तितकी छूटत बा;
जइसे कटार के धार
सान पर चढ़ के झलके लागेला।
बाकिर,
अजगुत के बात
सामने परगट में
मुसकान परत नइखे मद्धिम।
भीतर अँगार बा,
धुँआँधार बा,
धन्हकत लपट नरक के,
खल-खल खदकत बा
अदहन के लेखा पाप;
मगर ऊपर-ऊपर
बेला के फूल फूलाइल बा।
जइसे कवनो मूँदल आँवाँ पर
बिछल अँजोरिया होखे
चइत महीना के टहकार
धुनल रूई लेखा।
केहू बस्तर नइखे पेन्हले
कागद लपेट के

www.bhojpurisahityangan.com

कसहूँ लाज लुकवले बा।
केहू एखबार देंह पर
अपना ओढ़ले बा, जेकरा पर
मोट अच्छरन में छपल बाटे—
भुखमरी, लड़ाई, मार-काट,
करिया बजार, उज्जर चमड़ा,
अगिला चुनाव।
केहू लम्मारिए नोट साट
पतलून बासकट कसले बा,
केहू दसटकिए जोड़-जोड़
चुनिअक्ले बा आपन धोती,
मेहरारु सभ एकटकिया के
चोली पेन्हले अँइठत बाड़ी।
एखबार नोट !
एखबार नोट !!
एखबार नोट !!!
सभ जंतर-मंतर कागद के,
सभ बाहर भीतर कागद के,
ईमान-धरम, माया-ममता
सभ कागद के !
ई कागद जब तब
सरसरात बा, खड़खड़ात बा;
कागद-कागद में
होखत बा घुसुर-पुसुर
कुछ मतलब वाला बातचीत
चुप्पा चोरी।
.....

(क्रमशः)

---

* सखी मत आ सीरी लछिमी सखी *

[श्यामदेव प्रसाद सिंह]

सखीमतः—"नवधा भक्ति" में से एगो भगती सौख्य हवे। कबीर दास जी आतमा के इसतिरी मनले बारन आ परमात्मा के पुरूस। एहि भाव से प्रेरित हो के कुछ साधु लोग अपना के नारी मान के भगवान के पूजा धेयान करे लागल। वोही साधुन में एगो साधु सीरी लछिमी सखी रहन, जे अपना के सखी नाँव से परचलित कइलन आ परमातमा के पुरूस मान के उनकर पूजा धेआन करे लगले। सखीमत के का सिधांत हवे से संक्षेप में नीचे देहल बा, सुनल जायः-

सखीमत में कोरा नेम आचार से कुछ सरोकार नइखे। एह में छुआछूत के बिचार ना रहे। कवनो भेस में रहि के भजन कइल जा सकेला। कवनो चीभ खा के भजन कइल जा सकेला।

चोरी, छिनारो, झूठ, काम-क्रोध, लोभ-मोह-मद आ डाह के तेआग क के परमातमा के लगे पहुँचे के जतन करे के चाहीं। अपना के इसतिरी आ परमातमा के पुरूस मान के उनकरा से मिले के जतन करे के चाहीं। अपना के जड़ बूझ के लघुताई से भगवान के आराधना करे के चाहीं। एह में मन के हरमेशा भजन आ सुमिरन से भरले रहे के पड़ेला। सब नाँवन में राम नाम बड़ा समझे के चाहीं। चाहे सास से, चाहे सुरत से, चाहे अनहद से राम नाम के जपे के चाहीं। राम शब्द दसरथ के लड़िका समझल भरम में पड़ल बा। राम शब्द के अरथ ओह परमातमा से बा जे जनम-मरन से रहित बा। आ ऊ सरब बेआपी बा। एह में भजने के नियम परधान बा।

—: सीरी लछिमी सखी :—

सीरी लछिमी सखी जात के काएथ रहलन। उनकर जनम भोजपुर परांत के सारन जिला के एगो गांव में भइल रहे। वोह गाँव के नाँव हवे "अम-

www.bhojpurisahityangan.com

नौर"। "अमनौर" गाँव मरहौरा रैलवे टिसन से पुरुब करीब दु कोस पर बा। उनकरा बाप के नाँव सीरी मुनसी जगमोहन दास जी रहे सीरी लछिमी सखी के जनम कवना संवत में भइल रहे एकर पाता ठीक-ठीक नइखे। इहाँ का लड़िकाईं ए से बड़ा तेज माथा के आदमी रहीं। एही से इहाँ का जोग-धेआन आ पूजा-पाठ में हरमेशा लागल रहत रहीं। जब इहाँ का पुरा जवान हो गइलीं तब दुनियाँ से मुँह मोड़ लेलीं, चट दे इसवर भगती में लाग गइलीं। इहाँ का दुनियाँ से नाता तूड़ के निकपड़ी।साधु हो गइलीं। बिआह त इहाँ का नाहिंए कइलीं। बाल बरह्मचारी हो गइली इहाँका आ भारी जोगी हो गइलीं।

सखी जीके बनावल कइएगो किताब छप गइल बारन स। जबन सब भोजपुरी भाषा में बाटे। इहाँ का जे-जे किताबन के रचना कइले बानी से-से बड़ा कठोर शब्द में बा। लोग कहेला कि मातारी-बाप, गुरु आ साधु के बचन बड़ा कठोर होखबे करेला। काहे कि उपदेश के बात ई लोग बड़ा कड़ाई से कहल मुनासिब समझेला। बातो त ई ठीके हवे। खुदे सीरी लछिमी सखी जी साधु के कठोर बानी के बारे में एगो पद बनवले बानी सुनल जाव :—

"जीवन जनम सफल करू परानी,
गाई बिमल गुन ग्राम सयानी।
जो मुख पवित्र होखे सुखबानी,
जैसे सुध निर्मल गंगा जल पानी।
जैसे बालक बोलत तोतर बानी,
केहू का प्रीव लागत है प्रानी।
सुनि के हँसत मुसकात सयानी,
वैसे ही हमार बिनय सुन प्रानी।
लछिमी सखी वैसे ही हँसि हें जानी,
आपन सुत के सेवक मानी"।

सखी जी आपन जीवन चारो ओर घुम-घुम के बितवलीं। मरे के सात बरिस पहिले टेरूआ (मुजफरपुर) कुटी में रह के जीवन बितवलीं। आपन एह जीवन सम्बन्धी एगो उहाँ का पद बनवले बानी जवना से मालूम होत बा कि उहाँ के जनम 'अमनौर' गाँव में भइल रहे आ टेरुआ मठ, में अंतिम समय तक रहलीं :—

सुनु सखी सुनहु कहब कुछ अउर,
सारन जिला तकथ अमनउर।
कायथ वंस में जनमउ बउर,
राम लखन फल फरि गैल दउर।
जन्मभूमि कबों पुजलों गउर,
मिलि गइले सतगुरू माथे चढ़ल मउर।
जियते मरि गइलों लउकत ठउर,
संत समाज में चलि गैलों धउर।
सत-गुरू दिहलन ज्ञान के लउर,
झटपट मरलों मैं माछर सउर।
पाकल ब्रह्म अगिन कर भउर,
खनइलो मैं साध-संत मिलि जउर।
मौजे टेरूआ में आइलों धउर,
मिलि-जुलि भगत बनावल ठउर।
लछिमी सखी के सुंदर पियावा,
और तुमही लागि मेरी दउर।

सखी जी १३२१ साल के तिथि १८ बैशाख मंगरबार के पंचभूत देह के तेआग देहलीं। माने आज से करीब ४० बरिस पहिले इहाँ का मर गइलीं। इहाँ के समाधि सत्तरघाट (मुजफरपुर) के लगहीं टेरूआ के चंवर में बा। एह जगह पूस के पुरनवांसी के दिन इहाँ के बनावल किताबन के आरति होखेला। बड़ा धूमधाम से पूजा आ जलसा होखेला। इहाँ का मरला के बाद इहाँ के पहिला चेला सिरी १०८, कमता सखी जी इहाँ के बनावल किताबन के परचार करे के बोझे ले-ले बानी।

सखी जी के पांच परधान चेला बारन लोग। (१) कमता सखी, (२) सिद्नाथ सखी, (३) प्रदीप सखी, (४) गीता सखी, (५) त्यागी सखी, इ सब चेला लोग बिहार राज के आउर-आउर जिला में

www.bhojpurisahityangan.com

कुटी बना के रहेला आ भगति करेला । इहाँ के बरकु चेला जिन कर नाँव सिरी कमता सखी हवें। सीरी कमता सखी जी का चार जाना प्रधान चेला लोग बा। वोह लोग के नाँव ई हवे :—

(१) जलेसर सखी, (२) चन्द्रिका सखी, (३) महेंदर सखी, रघुराजनन्दन सखी। इहो लोग जहाँ-तहाँ मठिया बना के पूजा-पाठ आ भगति करेला। तोसर नंबर के चेला सीरी महेंदर सखी तरैया (सारन) बाजार के नजदीके दखिन आखुचक गाँव के बाहर मरइ बना के रहेलन आ ऊ वोही गाँव के बसिंधा हउअन।

सिरी लछिमी सखी नीचे लिखल ग्रंथ के रचना कइले बारन। जवना के पढ़ला से मालूम हो जाइ कि साधु बाबा केतना पहुँचल जोगी रहन। :—(१) अमर सीढ़ी, (२) अमर कहानी, (३) अमर विलाश, (४) अमर फारास, (५) हटाका। उपर के पाँचो किताब छपल रूप में सिरी कमता सखी के मठ में छपरा में मिलीं। कमता सखी के मठ एह घरी छपरा कचहरी टिसन के उत्तर चंवर में बा। ई पाँचो किताब भोजपुरी साहित्य के गौरव हवन स। भोजपुरी साहित्य के निरमान में एह किताबन से निमन सहायता पहुँच सकेला।

एह पाँचो ग्रंथन में नीचे लिखल छंद (राग) बारन स :— बिदावति, बिनय बहार, गारी, झूमर, हमरा, बाललीला, ठुमरी, भैरवी, लावनी, पूर्वी, भजन, खेमटा, शब्द, सवैया, लावनी, ध्रुपद, कजली, ककहरा' होरी, धामार, चैतावर, आदि। एह पाँचो ग्रंथन में करीब, ४२७६ भजन (पद) बा। सिरी लछिमी सखी के भजन चमत्कार से भरल, मौलिक, आ ठोस भइल बा।

भजन मन बानी आ साँस से कइल जाला। सांस से जवन भजन होला, ओकरा के अजपा जप कहल जाला। सखी जी बाबा ज्ञानी दास नाँव क औघर से हमेशा सतसंग करस। जिनकर छाप सखी जी पर पुरा पड़ल बा। सखी पंथी साधु लोग एक रकम के बैष्णव साधु हवे। आ सखी जी अपना के हमेशा बैष्णवे कहत रहलन। आ बैष्णवे उहाँ का रहलो रहीं। बाकिर ई अपना के नारी मान के भगवान के पूजा आ भगति करस। कबीर साहेब प्रआतमा के नारी मनले बारन। नवधा भगति में एक भगति इहो हवे। एही से सखी जी सौख्य भाव से भगवान के उपासना करस। एह में तनिको सक नइखे कि लछिमी सखी जी भोजपुरी के एक नीमन कवि रहलन हवें। भोजपुरी साहित्य का इनका पर गौरव बा।

सखी जी के भजन ढेर राग-रागिनी में बाटे। वोह सब पदन (भजन) में प्रेम, बैराग्य, बिरह आ ज्ञान के बर्णन बाटे। बर्णन रहस्यमय आ गुढ़ो बा। इनकरा कविता में कड़ा बानी बा कतहीं-कतहीं गारीओं बाटे। कहलो बा कि परभंस, बालक सूरमा आ सिंह के बानी बड़ा-कड़ा होखवे करेला जवना सभ के उदाहरन नीचे मिली। सखी जी के पाँचो ग्रंथन के पदन के कुछ उदाहरन नीचे देत बानी सुनल जाव :—

—: (१) अमर सीढ़ी से :—

(संकीर्तन का पद)।

राम रसायन पीए तेकर,
तीन लोक नोकरिया।
खड़े निशान अमरपुर जाहीं,
जहाँ लगे कचहरिया।
सात लोक का ऊपर-ऊपर,
ऊपर बसे आठवें गगन दुअरिया।
सुत-सुकृत के कुंजी लागे,
खुलि गये बेअरिया।
गगन गुफा में मंदिर झलके,
हिरामति जरिया।
सुन्दर दिया देखत रह,
बैठल-बैठल दुअरिया।
देखत-देखत कैसन लागे,

www.bhojpurisahityangan.com

जनु अमृत के घरिया ।
"लछिमी" सखी के सुन्दर,
पियवा सुते तानी चदरिया ।

(२)

रसना राम-राम कब कहवे;
जे ज्ञान खड़ग लेइ गहवे ।
राम-राम कहवे अमर रस लहवे,
जे ऋद्धि ना भव जल दहवे ।
राम-राम कहवे अमर पद लहवे,
जें आपन पिया संग रहवे ।
'लछिमी' सखी के सुंदर पियवा,
बैठल-बैठल दुध दही महवे ।

(३)

भजन बिनु राम के सिंगार कवना काम,
आँख ना सूझे गँवार के देहिया हारचाम के ।
चलना चलाकी चल त्रिकुटी—मोकाम के,
जरनी ना जाइ बिनु पद निर्वाण के ।
देह के ठेकान ना कवनो सांझ के बिहान के,
करना अब तैयारी गंगन सब समान के ।
वोही गंगन में लाल मंदिर करना आराम के,
'लछिमी' सखी के सुंदर पियवा ले सुख-धाम के ।

(४) राग—खेमटा ।

सरद्दरी के सखिया उलटि चलु सखिया,
से खोली लेहु गंगन खिरिकिया ।
ओही रे गँगनवा में बसे मोरा साहब,
तासन करहुँ पिरीतीया निरखी पड़खि ।
ले रूप पिया के लगाई के साँथी सुरतिया,
झल-झल झलके रूप-पिया के,
जानु सुरूज के जोतिया ।
अंबर बरिसे दामिनि दमके,
लाल जवाहिर मोतिया ।
बहुत दिनन के बिछुड़ल पियवा,
तोरा मिल गइले ए सखिया ।
"लछिमी" सखी के पियवा,
सुंदर छुटि गइले ह दुरमतिया ।

(२) अमर-कहानी से

[१ राग निर्गुण]

आरे-आरे का कहो थवइ के बलिहारी ।
आरे एक मटिया के सानलें हाँड़ी,
उजे काहु के गोर मुख काहु के कारी ।
आरे सुंदर मुरत करि के तेयारी,
उजे नाहक में फरफंद में डारी ।
हाथ में लेहु सखी ज्ञान कटारी,
उजे माया मोह के करीले बिचारी ।
अबकी लेहु सखी जनम सुधारी,
"लछमी" सखिया कहत पुकारी ।

२ [राग धुरपद]

चलु-चलु गगन घनघोर होत ।
छन-छन प्रकाश होत, आप से आप जोत ।
चारू ओर भइले जलवा मई,
कुंइयाँ में फूटल सोत
साफ-साफ खिंच लेहु उहवाँ,
महा संग्राम होत ।
जे तीनु लोक जीति लेहु;
बिना कौड़ी खंड जोत ।
हर महेश तहाँ फरत मौत,
डाटे पाते खोंत के खोंत ।
गुंथि-गुंथि माली पेन्हत कबीरा,
हँसत वो आनन्द होत ।
पेन्हु लेहु एक नाम धोत,
नाथ बग्गीं हाँक जोत ।
लछिमी सखी भर कर चलु,
नाहीं त अबेर होत ।

(३) अमर विलास से :—

(१) [भजन]

सुनु सखी सुनु मन करू धीरा ।
जानुक बैद बनी ऐलेह कबीरा,
देखत सफल हरी लीहले ।
उजे हाँथ पर से लीहले बालम खीरा,

www.bhojpurisahityangan.com

सात ही मात्र भइले हेवाल शरीरा।
सहत रहेउ मैं रागिनी के पीड़ा,
बारी रे बयस मोरा कोमल शरीरा।
लछिमी संखी कें जइसे मेटल पीड़ा,
सभनी के मेंटो पलटे बांझ शरीरा।

(२) [भजन]

चलु सखी पढ़ु एक नाम के पहारा।
उर्ध मुख बसेला अमरपुर सहारा ॥
नाचेला अहीर सखी गावेला महारा।
जे मेटेला जनम-जनम के हाहारा ॥
सुख से भजन कर के आठो पहारा।
खाये के अनवन बा पीए के जहारा ॥
चल ना त चलहु चरेला खेत चाहारा।
"लछिमी सखी चलु अब अइलन का हारा ॥
हनुमत बीर देबे खातिर पहारा।

(४) अमर-फारास से

(१) रामायण वसंत रितु)

उजे गइले सिसिर अब अइले बसंता,
अवहुँ ले ना अइले प्रीतम कंता।
ई ना जानि जे जाके कहीं हो गइले संता,
कि लेलन कंठी माला भेष भगवंता ॥१॥
उजे कतिना में कइलीं देवी वो के मंता,
इहो त ना बारी हाली होत परसंता ॥
जे अइहें त चढ़ाएब हाथी करिदंता,
कतिना दिन में भैलन जोहत पंथा ॥२॥
लछिमी सखी जहिया देखब अनंता,
औरो चढ़ाएब छोटी चा के जंता ॥

२ (उपदेश भजन)

कतिना लुका हम लगाईं तोरे गाँड़ी।
जे चाटल छोरि देहु परेया के हांड़ी ॥
चलु गंगन गोफा में तूं लखहु तारी।
निशि दिन जहवाँ रहत—उजियारी ॥
रिमि-झिमि रिमि-बरिसत बारी।
उजे एको गतर नहीं भींजत हमारी ॥
लछिमी सखी परेना परतीत हमारी।
त देखि लेहु वेद वो किताब उघारी ॥

(५) हाटाका से

(१) भजन।

चलु सखी छोरि देहु कूटन भूस,
ना त पिया बैठेला गगन में रूस।
नाहिं त जम्हुआ के आवेला घूस,
जे देखते पद बे फुसुर फूस ॥
जम्हु ना लेवे रूसवत घूस,
तू नाराज रह भा रह खूस।
आखिर तन तजि जइबे फलूस,
पांचो चोर घर-घर लिहलन घूस।
चलु सखि चलुहु गगन में घूस,
जपि लेहु माला बिछाई लेहु कूस ॥

(२) भजन—

हाटाका भाटाका मरम की काट,
करिलेहु मंजन त्रिकुटी के घाट।
गंग जमुन बहे संगम पाट,
भले मउनिया लागल बाट ॥
पंच पचीस मिलि करेलेहु साट,
नाही त जम्हुआ मानी ना झांट।
उजे मारत मारत उखरी साट,
सोने के छड़ी बबुर के कांट ॥
आखिर रोअब पुका फाट,
केहुना छोराई मजिष्टर लाट।
अवहुँ से चलहुँ सोझ सोझ बाट,
ले गुरूजी के नाम टिकुलिया साट ॥

www.bhojpurisahityangan.com

❀ भूमिदान यज्ञ ❀

श्री रामप्रीत शर्मा 'प्रियतम'

भइया सुनीला, विनोवा भावे, आइल बाड़े ना।
भइया भूमिदान यज्ञवा करावत बाड़े ना॥
भइया उहो हवे गाँधी के पुजरिया हो ना।
भइया उहे बाड़े एक कंगरेसिया हो ना॥
भइया चलीं जाना करीं दरसनवा हो ना।
भइया दान करीं, खेतवा बधरिया हो ना॥
भइया देसवा के येही में भलइया हो ना।
भइया होखे जनी केहू के बुरइया हो ना॥
भइया दिल खोली भूमि दान करीं जा हो ना।
आ भइया, जगवा में सुजस कमाईं जा हो ना॥

× × ×

भइया राजा लोग राज पाट छोड़ी देले ना।
भइया गइल जमींदरियो से देखि लेल ना॥
भइया खेतवा बधरिया के मोह छोड़ ना।
भइया सब भूमि देसवा के भेंट कर ना॥
भइया पासे बाटे रूस लाल चीनवा हो ना।
भइया उहे देस हवे कमुनिस्टवा हो ना॥
भइया थोड़े लोग रहसु धनसेठवा हो ना।
भइया उहों रहसु सेठ साहूकरवा हो ना॥
भइया मिटी गइले नामवा निसनवा हो ना।
आ भइया सब साफ भइले खूनी क्रांतिया में ना॥

× × ×

भइया देखना करियवा बदरिया हो ना।
भइया इ त हउवे जनता के रजवा हो ना।
भइया सब के त एके अधिकरवा हो ना॥
भइया सब के त चाहीं एक घरवा हो ना।
भइया पेट भरि सब के भोजनवा हो ना॥
भइया सब के त देह पर कपड़वा हो ना।
भइया भागवा के धोखे अब रही केहू ना॥
भइया पूरब जनमवा के भोगी केहू ना।
भइया देसवा पर आवेना विपतिया हो ना।
आ भइया, समझ के चले में भलइया हो ना॥

www.bhojpurisahityangan.com

पिआसि

[मदन मोहन कुँवर बी. ए.]

अब हरख नारायन के उमिर भी कम नइखे। पूरे १८-२० बरिस के होत होई ? निकहा ऊ अंगेजी स्कूल के दसवां दर्जा में पढ़तो बाड़न। एक दिन उनका के मन मधुअवले देखि के हम गते से उनका के बलवनी आ पूछनी—हरख ! मन काहे खातिर बिधुअवले बाड़ऽ, का बाति ह। तनी कहबो त करऽ। हरख रोवे-रोवे मुह क के कहलन—का कहीं मास्टर साहेब आज काल्हु लरिकन के जिनगी से खेलवाड़ कइल जइसे बाप मतारी के उदम हो गइल बा। बे राह गवर के आ बे सोचले समुझले लरिकन के माथ पर बरिआर भूत थापि दिहल जइसे कवनो आसाने काम होखे। लोग रुपया खातिर एको अधामति छोड़त नइखे। पइसा के पाछा परिके उचित अनुचित अच्छा बुरा सबके बिचार छोड़े के तेआर बा। आतना कहि के हरख एक ब एक चुप। बुझाइल जइसे ऊ दुख के दल-दल में गड़ि गइल होखसु।

हम पुछनी—भाई कहल त बहुत लेकिन एकर मतलब हमरा बुझाइल इचिको ना। कुछ साफ कह त समुझि पाईं।

मास्टर साहेब रउवा नौ जानी ले छब ना जानीं। बुझत त होखबे करबि बाकी कहतो बानी। आ रउआ सुनिये के का करबि। अन्हरा के आगा रोवे आ अपना दीदा खोवे। घर के सब लोग से कहनी बाकी केहू कान नइखे करत। अबहीं परसबें तिल-कहरु लोग आइल रहल हा। आ गउगी बा जे ऊ लोग फेनु परसों आई। मन सक-फक में परल बा। का करीं, काहाँ भागि जाईं। बरजल केहू मानत नइखे।

अरे भाई त तू कोहनाइल बाड़ऽ ? का तहरा मन में इहे अमनख लागल बा जे तोहरा से पहिले ना पूछाइल ? अगर तोहरा कवनो बाति के भनक मिलल होखे त ओकरा के कहऽ। ओके सवाचल जाई। लागी नू पाता। हम कहते चलि गइनीं—सादी से त बउराहो ना बिजुके तू काहे भड़कत बाड़ऽ।

मास्टर साहेब होसिआर होके गवाँर लेखा बतिआवत बानी हमरा अमनख काहे के लागे जाऊ। बाकी तनी बिचार करीं। बिआह होखे हमार, आ ओमे हामार तनी मुहो ना छुआय। कातऽ बे पुछले तनी कुछ कहीं तऽ ओपर तनिको खिआल ना कइल जाय। अइसन घर के हालत हो गइल बा जे अब त हम उबिआ गइल बानी। रुपया मिली आ दू चार बिगहा धरती किनाई। ओमे हमरा दस पांच काठा बाखारा मिलबे करे तऽ का हम अतने पर केहू से जनम-सनेह जोड़ि लीं। घर वाला लोग दावावत बा। खैर—अतने में हरख के आँखि डब-डबा गइल। तनी दम लेके ऊ फेनु कहले—कहीं मास्टर साहेब के जानत बा कि सनकू की नीक, ठीक की बे ठीक, छोट कि बड़, लूरिगर कि बे लूरि के कीदो काठ के उल्लू।

अतने में उनकर संघतिया कैलास कहि देले। आ गोरि कि करिआ, पातर कि मोट आ पढ़ल कि चापाट। हरख खिसिआ गइले आ बोलले—अबरु बनलऽ। इहे त चउलि के मौके आइल बा। आपना पर परल रहित त बुझाइत।

अब हम सम्हरनी आ बाति बहलिअवनी। खैर त का तू पकिया इरादा कइ लेले बाड़ऽ कि उहाँ बिआह ना होखे। आ कि आपन सन्देह दूर क के, जाँचि, सवाचि के पूरा मन भरि के, उहाँ शादी कर

www.bhojpurisahityangan.com

सकेल। खोंखि खखारि के बन्हले बाति एगो कहऽ।

हरख—देखे सुने के त कवनो सर्त बा ना। तिलक पूरा हो जाई बस सब मामिला ठीक। सोखा के भाव आवे-आवे तले पूत के आँखिए निकलि जाई। अब समे कहाँ जे रउवा जाँचबि सवाँचबि। हम तनी जीभि चटका के कहनी—अरे भाई जाँचे बुझे के कह अबहीं त समे आतना अउला बा जे अपना आँखि देखिब्यो सकेलऽ। आदमी के अहथिर से काम करे के चाहीं आ तनी भारी सारी रहहुँ के चाहीं। हरख के मन में भी साइत इची बोध भइल आ कहले— का मास्टर साहेब का बात करत बानी! माठा घोंटाय ना पीठा धसोरीं। आखिर हम हरख आ कैलास तीनों आदमी उहे जगहि पर देर तक बइठल रहनीं। बाति के विषय इहे रहे। बीच-बीच में हरख के रिगा दिहल आ पिनिका दिहल कैलास के काम रहे। अंत में भइल कि हरख जासु आ जाँचसु। बाति कहीं खुले ना, एह पर विसेस जोर दिहल गइल।

जवना गाँव में हरख के सादी होखे के रहे ओह गाँव के नाम रहे "अंजोर"। अंजोर रेलवे टीसन के सटले बा, ई हमनी के पाता रहे। दूसरे दिन पराते कैलास आ हरख अंजोर खातिर रवाना हो गइले। टीसन पर उतरि के हरख भेख बदलले। उनका माथ पर बड़े-बड़े बाबुड़ी रहे बाकी ऊ बेमरम्मत अतना रहे कि बुझात रहे जइसे आन्ही से केहू गिरहथ के खेत के डाँठ जेने-तेने छितरा गइल बा। डाड़ में उलंगी ऊजर धप-धप साफ धोती आ देही में एगो सैन्डो गंजी रहे। धोती में कहीं करिखा के दाग भी लागल रहे। कैलास जवन पहिरले रले ओही भेस में टीसन से चलले। अब हरख के होखेवाला ससुर सिधेश्वर सिंह के घर जानल ना, ना सुनल। काँहाँ जाउ लोग अंत में घास गढ़े वाली एगो मेहरारू से पूरा हूलिया लेके आगा बढ़ल लोग। आ ओही मेहरारू से पाता लागल कि उनका घरे दुआर पर के गरू के आलावा बकरी भी पोसलि बा। आ ओह बकरी के मेहरारूवो लोग बेंचि सकेला।

हरख के भेख देखला से बुझाय जइसे सात साँझ के उपासल होखसु। ऊ बाबू सिधेश्वर सिंह के पिछुती वाला खिड़की पर पहुँचले। ओही दुमूहाँ में एगो दूगो पुरनिया लोग आपुस में साँइ-फुस करत रहे। हरख के पहुँचते सब लोग हरख कावर चिहाऽ के ताके लागल लोग। आ अतने में हरख से कईगो दन-दन सवाल हो गइलनस। हरख भी मायाबी ठहरले। आपन जाल पसरले आ कहले— हम कालकाता से घरे जात रहनीं हाँ। गाड़ी में हामार सब माल आस-बाब चोर उतारि लेलसिहा। कइसो-कइसो इहाँ तक आ गइल बानी। बड़ी भूखि लागल बा।

चोरी के नाँव सुनते सब मेहरारू बोलि उठली सऽ।
आहि आहि लवड़ू के पूत चोर के भाला ना होई।
भाला हइसन केवला लेखा लरिका से अइसन छल।
ऊ मटिलगनू चोर उछिन हो जइहें।

अतने में आँगन से ढेर मेहरारू आगइली स आ उहाँ खम-खम मेहरारूवे मेहरारू हो गइली स। एगो मेहरारू पूछलसि-ए बबुआ तू कवन बेरादर हव आ तोहार का नाँव ह। हरख आपन नाँव "अलबेला चौबे" बतवले आ जाति बराम्हन। एही तरी उहाँ बहुत बाति भइल।

हरख गल-चाभा त खूब मारत रहले बाकी उनकर मन उहाँ रहे ना, सिधेश्वर सिंह के घर के सब केहू उनका के देखले रहे। हरख के जीव में ई बरि-यार सक बनल रहे जे केहू आ मति जाय। अगर केहू आ जाई आ जान पहिचान हो जाई त एगो दोसरे लीला लागी। तुरंत ई बात इहाँ-उहाँ हो जाई। हरदम ऊ एने ओने ताकसु।

अब एगो अधेड़ मेहरारू एगो डाली में आधि सेर चिउरा आ एगो डबल गुड़ के भेली ले के जुटि गइल। हरख चिउरा फक-फक फाँके लगले। चिउरा खासु जइसे सात सांझि के उपासल होखसु। खातो खा बाति के गाड़ी कहीं बिलमे ना।

www.bhojpurisahityangan.com

हरख के चिउरा भकोसल त काम रहे ना । ऊ एह फेर में रहसु कि कहीं सादी होखे वाली लड़की के कनभटकियो प देखि लेसु बाकी इनकर कइल-धइल सब बेकार । बुझा गइल कि उनकर उहाँ लहि ना । अब हरख पुरान फेर में परले । एने चिउरा भी सधल । हरख के उकिति खुलल । ऊ कहले इची पानी" ।

ई सुनते उहे अधबुढ़ मेहरारू एक लोटा पानी ले आइल । हरख धीरे से कहले । हामरा कींहाँ के बाराभन दोसरा के गगरी के पानी ना पीयेला । तनी टटका पानी पिआईं । दुपहर के समे आ दुआर प केहू मरद मानुष हइये ना रहे । पानी के ले आवो ? उहे औरति बोललसि बबुनी-बबुनी । कारे माई के आवाज भितर आंगन से आइल । आ अतने में हरख का देखत बाड़े कि एगो गोर भभूका १३-१४ बरिस के सुनर लड़की डोल लेके आइलि । हरख के अब काम हो गइल उनका पिआसि त रहे ना । पिआसि आँखिये में रहे तबन खूब बुताइलि । अब हरख के डर रहि गइलि खाली जान पहिचान के । ऊ धीरे से पानी पीके उहां से ढरकल चहले । हरख जसहीं घर से दस डेग गइले तले बृजकिशोर, सिधेश्वर सिंह के जेठका टेल्हा उनका के देखले । हरखो के नजर परि गइल । राहो दोसर ना रहे जे भट से दहिने बांये होखसु । पहिले त ऊ भट-भटइले बाकी भट से एगो कोठि के लगे पेसाब करे बइठि गइले । बृजकिशोर जब कुछ आगे बढ़ि गइले त उहाँ से हरख भटकले परइले । मेहरारू लोग हरख के खिरिकी से झाँकत रहे । बृजकिशोर भी उहाँ जाके कहले । भउजी अनमन होहि लरिका लेखा लरिका देखल बा । पटरी बइठि जाइ त बाड़ा सुनर होई ।

तले अतने में एगो पुरतियाँ बोलली कवन लरिका ? कवन ठीक कि ई चोला कब छुटि जाई तनी ओ लरिका के बोलावऽ देखि के हीया जुड़ा लीं । कइसन खोजले बाड़ऽ लोग । एकरा पहिलेहीं कैलास बकरी कीने के बाति छेड़ले रहले । अब बृजकिशोर बोलावे के चाहसु आ कैलास रोकसु । बकरी बहाना रहे । खूब रकझक, झाकां झूमर भइल । बाकी भइल ऊहे जे बृजकिशोर चहलें । धावल ऊ हरख के पास गइले आ गवर से हरख के देखलें । अब हरख के दिल सन्न दे हो गइल । काथा तऽ बृजकिशोर छन-छेप में सुनलहीं रहले । भट देनी कहलें । चोर कहीं का दोसरे के चोर बनावे में आगर बाड़ऽ । हरख निहोरा करसु हाथ जोरसु आ बृजकिशोर दोसरे गावसु । संजोग के बाति कि सिधेश्वर बाबू आ दस-पाँच आदमी अवरू आगइले । बाति बढ़त देखि के हरख संकोच से लदि गइले आ गते से कहले "चलीं जबन चहनीं तबन कइनी" । आ सिधेश्वर बाबू के घरे अइले ।

—:※:—

इनकी पहचान यह है ।

डाक्टर हरदेव बाहरी एम. ए. पी. एच. डी.

भोजपुरी के १० वाँ अंक में गँवइ के कुछ सब्दन के परिचय पूछल गइल रहे । ओकरे कुछ पहचान बाहरी साहेब भेजले बाड़े । अवरू विद्वान लोग का एह पर ध्यान देवे के चाहीं । —संपादक

प्रिय महोदय,

'भोजपुरी' के अंक १० में पृष्ठ २५ पर आपने कुछ शब्द दिये हैं । इनमें कुछ शब्द अतिपरिचित हैं ।

साइत— अरबी में साईत ساعت घड़ी । हमने नेक साईत का अर्थ साइत ही में जोड़ लिया है, जैसे कुलीन = अच्छे कुल का । 'कुलीन' शब्द में अच्छा

www.bhojpurisahityangan.com

का संकेत तो नहीं है। अंग्रेजी में भी कहते हैं He is in spirits = He is in good spirits.

अतः साइत = अरबी, नेक साईत, शुभ घड़ी।

सनुख— अरबी, फ़ारसी सन्दूक़। भोजपुरी में न्द = न, जैसे चान = चांद, न्ध- = न्ह, जैसे चनरमा = चन्द्रमा अन्हार = अन्धकार बन्हल = बन्धना

'सन्दूक' से भोजपुरी में पहले सनूक बना। फिर क को महाप्राण ध्वनि कर दिया गया, ऐसा कई शब्दों में होता है। आप मुल्क को मुलख, पासंग को पासंघ जुल्फ़ को झुलुफ कहते ही हैं। 'सनूख' से सनुख साधारण गति है।

सोहर— = सहोदर। आरंभ में यह बहनों का भाई के जन्म पर मंगल गीत रहा होगा। बाद में बहनों का साथ अन्य स्त्रियों ने दिया और उसे व्यापक बनाया। सोहर को 'शोभा + इल' से भी व्युत्पन्न मान सकते हैं। 'इल' प्रत्यय विशेषण बनाने के लिए प्रयुक्त होता है जैसे जटिल, स्वप्निल, फेनिल आदि में। श का स और भ का ह प्रायः सभी आधुनिक आर्य भाषाओं में हुआ है। अतः शोभा + इल = सोहेल। अंतिम आ हिंदी भाषाओं का पुंल्लिंगवाचक प्रत्यय है ही। सुहेला = वि० सुन्दर, सं० स्तुति, मांगलिक गीत। गुरु ग्रन्थ में 'सुहेला' शब्द मंगलगीत के अर्थ में कई बार आया है। लकार प्रायः आपकी भाषा में होता है जैसे मूली = मूरी; चावल = चाउर। सुहेला से सोहर = मंगलगीत; और फिर अर्थ संकीर्णता से बच्चे के जन्म का मंगलगीत।

साझ = सं० सांश। पंजाबी और पश्चिमी हिन्दी में 'सांझ' कहते हैं। -अंश का अंझ हो जाने के अन्य उदाहरण पंजाबी में हैं— वंश = वंझ (वांझ), दंशति = दझना। जान पड़ता है कि भोजपुरी में यह शब्द पछाँह से आया है।

सवख = सवक़। 'क' का 'ख' ऐसे ही हुआ है जैसे 'सनुख' में। 'सवक़' = शिक्षा, पाठ; लेकिन शौक के अर्थ में रूढ़ि हो गया है। जैसे दिमाग़ का अर्थ था 'मस्तिष्क', पर मस्तिष्क वाले गर्वित हो जाते हैं, अतः इसका अर्थ 'गर्व', 'घमंड' भी हुआ। सवक़ तो शौक की चीज़ है ही।

सेवर—'घेवर' के सादृश्य से बना जान पड़ता है। 'घेवर' तो घी में खूब भून-तल कर बनाया जाता है। 'सेवर' कुछ कच्चा रहता है।

सवाँग— = स्वाँग। हिंदी में भी 'सवाँग' रूप मिलता है। हिंदी में अर्थ है 'नक़ल' 'भेष'। लेकिन स्वांग का अर्थ 'Procession जलूस' भी हो जाता है। पंजाब में होली का, दशहरे का 'सांग' निकलता है। घर के आदमियों का जमघट भी एक विशिष्ट जलूस ही तो है।

अन्य शब्दों के संबंध में भी मेरी कुछ कच्ची-पक्की धारणायें हैं, पर भोजपुरी-कोश के बिना कुछ कहा नहीं जा सकता, क्योंकि एक शब्द की विकृतियों को सिद्ध करने के लिए अनेक समान उदाहरण देखने होते हैं।

अगर 'भोजपुरी' पसंद हो आ एकरा के चलावे के चाहत होई त जवाब खातिर कार्ड भेजीं। अइसन ना होई त भोजपुरी पर खरच के बहुत दबाव पड़त बा। भोजपुरी ह केहू खास के ना। एह से एकर भला बुरा सब का सोचे के चाहीं।

(डाक्टर) पी. गांगुली
मंत्री
भोजपुरी समिति, आरा।

www.bhojpurisahityangan.com

❀ महात्मा गान्धी ❀

[भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु']

भक्ति प्रहलाद के अहिंसा बुद्धदेव जी के,
सरल सिधाई सार शिवि जी के खींचि के ।
आन प्रशुराम जी के ज्ञान विश्वास ले के,
धीरता विदेह नेह रग-रग सींचि के ।
व्रत ले ले श्रवण के सत परमेसर के,
मुठी भर हड्डी ले ले दादा जी दधीचि के ।
शिव के लंगोटी लेले लकुटी कन्हैया जी के,
लगन-चदर ले ले लेनिन के फींचि के ॥
सत्याग्रह अस्त्र मुस्कान कलेयान ले ले,
धीरे-धीरे देशवा में गान्धी बाबा उगले ।
जुलुम अनितिया के रतिया बिलाई देले,
हिंसवा के सूरुज पछीमवा में डूबले ।
बकरी के दूध पी के बघवा भगाई देले,
भूख हड़ताल क के काल ललकारले ।
उजड़ल बगिया के भगिया फिराई दे ले,
बनरा बेलाई के बसन्त के बसवले ॥

❀❀❀❀❀❀❀❀❀

॥ लाहौर से केटा तक के दउड़ ॥

[एक हवाबाज सिपाही]

लाहौर से दखिन वाल्टन ट्रेनिङ्ग स्कूल में रहि के फौजी सिच्छा लेत रहीं। शनिचर के १२ बजे दिन के बाद से अतवार तक बाहर कैम्प से निकल के घूमे में खूब निमन लागत रहे। हमरा इहाँ के संगी लोग रहे जब छुटी होखे त हमनी के दल अमृतसर, लाहौर के स्टेसन पर देखाई देत रहे।

लाहौर में देखे जोग जगह :—

शाही मसजीद, किला, अनार कली, माल रोड, बाजार, आ रेलवे स्टेसन बा।

लाहौर अतना पुराना सहर ई जतना पुरान इतिहास बा। समय-समय पर हिन्दुस्तान के नौजवान एही जगह से समूचा उत्तर पछिम सीवाना के देख-भाल करत रहले हा।

पंजाब में सिख राज के अस्थापना करे वाला नर केसरी रणजीत सिंह जी के समय लड़ाई में काम आवे वाला हथिआर अबहुँओ लाहौर के किला में

www.bhojpurisahityangan.com

भरल बा, जवना के देखला पर आज भी हमनी के छाती अपना पुरवज लोग के करनी पर सावा बीता ऊँचा हो जाला। जवना तोप से रणजीत सिंह काबुल फतह कइले रहले तवन तोप अबहुँ बा। भारत गौरव लाला लाजपत राय पार्क में एगो पेंड़ का नीचे रखल बा। ऊ तोप हमनीये के देश के लोहार बढ़ई के बनावल ह; बोकर नाम भीमा वाली तोप ह। ऊ अइसना धातु के ह जवना में मुरूचा आजु तक नइखे लागल। किला में बहुत सा पीतल के तोप, छव-छव फूट लाम्बा नाल के बन्दूक, पाँच-पाँच नाल के पेसतउल, देही बो कपार के लोहा के टोप भी बा, जवन हमनी नियन जवान से त कसहु उठि जाई लेकिन पहिरला पर डेग बढ़ावे के हिम्मत ना करी। बोह घरी आधा किला अँगरेजी सरकार आपना काम में ले आवत रहे अवरू आधा देखे के हुकुम रहे।

मसजीद :— किला के सटले पछिम ओर बा। पुरूब रोख के दुवारी बा चार गो मीनार सरगे से बात करत बाड़े स। एक सै पैसठि भा कुछ कमवेशी ठीक से मन नइखे परत बोह मीनार पर चढ़े के सीढ़ी बाड़े स। चढ़ला पर समूचा लाहौर शहर अँजोरिया रात में अइसन नीक लागेला कि का बरनन करीं। रावी नदी लाहौर सहर के उत्तर पछिम से अइसन घेरले बा कि बुझाला कि उत्तर पच्छिम के दुसमन के चढ़ाई के डर से गोदी में लेके बइठल होखे।

बाजार :— अनार कली, माल रोड, मसहूर बाजार बा। लाखों रोपेआ के तरह-तरह के माल के बिक्री होत रहेला। साँझ खाँ त फूल अतर के खुसबु से बजार अइसन गमकि जाला कि बुझाला कि सरगे ह। खूब छरहर-छरहर जवान बजार में नीमन लुगा लाता पेन्ह के अवरू सोभा बढ़ा देले।

आबादी :— अइसे त लाहौर जिला के आबादी १६९५३७५ ह जवना में ५९५१९७ हिन्दू, सीख १०२७७७२ मुसलमान बकिए में और धर्म के माने वाला लोग बा। लेकिन सहर में त ज्यादे तदाद हिन्दू सीख के दिखाई पड़त रहे। काहे कि इहे दूनों जाति रोजगार धन्धा वगैरह करत रहले चाहे लक्ष्मी जी के भी कृपा इनके उपर रहे। एह घरी का हालत बा तवना के पता नइखे।

एक दिन अइसन भी आइल कि हमार बदली हिन्दूस्तानी हवाई सेना के न०१ स्काडरन में भ गइल। जवन बोह समय क्वेटा में सुमंगली हवाई अड्डा पर रहत रहे। बोहीजा हवाई सेना काहे रहेला तवन हम पाछे बताइब।

लाहौर से एगो रेलवे लाइन बिलोचिस्तान क्वेटा से आगे चमन तक गइल बा। सिन्धु नदी के एह पार तक बड़ी लाइन आ बोह पार छोटी लाइन बा।

कुछ रात रहे त हमार गाड़ी हमरा के लेके क्वेटा के ओर चलल। जब तक अन्हार रहे तब तक कुछ ना बुझाय लेकिन जब साफ भइल त रेलवई के दूनो ओर गेहुम आ बूँट ढाढ़ि लागल रहे, एक-एक बीता के बालि पोरसा भरि उपजल रहे। बोह जगह के माटी हमनी का दीयर नीयर बालुवे ह लेकिन बात बा कि रावी आ चेनाव नदी के नहर लाहौर, सीआल कोट, गुजारांवाला, माटगोमरी से मुलतान तक के इलाका के हमेसा पानी से डूबवले रहेला एही बोजह बा कि पंजाब अन्न के भंडार कहाला।

एह सब बात के देखत-देखत हमार गाड़ी भावल पुर के जंगली इलाका से होके जाये लागल। दूनों ओर जंगले-जंगल देखलात रहे। तब तक अन्हार भ गइल। हमनी का खा पी के सूत गइलीं जा। जब सुबह नींद टूटल त सीन्धु नदी के आगन में हमार गाड़ी पहुँच गइल रहे। बोह तरफ जतना स्टेसन रहलेस कुलि में आग लगा दीहल रहे आ केहू ना रहे। दू-तीन घंटा चलला पर गाड़ी ठहरे, पुछला पर मालुम भइल कि कबीला स्टेसन लूट के आग लगा देले बाड़े स। इहें सब देखत २ सीन्धु नदी के दर्शन भइल हमनी का सब केहू प्रनाम कइलीं जा।

तब तक गाड़ी शिकरपुर स्टेसन पर पहुँच

www.bhojpurisahityangan.com

गइल। वोही जा बड़ा चहल-पहल रहे। छव-छव सात-सात फुट उँचा, विसाल शरीर, नव-नव गज के मुरेठा बन्हले हाथ में कुल्हाड़ा लेके स्टेसन पर घूमत रहेले। देखला पर कवोला वाली बात इयादि परि जाय।

हमनियों का हवाई सिपाही रहींजा अपना-अपना कान्धा पर स्टेनगन लटका-लटका गाड़ी से बाहर उतर लीं जा। गाड़ी में से बाहरा निकलत कहीं कि सुखल, ताजा फल बेंचे वाला, सोण हलुवा बेंचे वाला चारो तरफ से घेरि लिहले। हमनी का कुछ खुमानी सोण हलुवा खरीदलीं जा, तब तक सीटी बजावत गाड़ी चल दीहलस।

सिन्धु नदी का दहिना किनारा का सिवि सहर से बिलोचिस्तान सुरु होला। हमनी का त बोलन के नाँव सुनले रहींजा वोह दिन त परतत्ते देखे के मिलल।

सींगल रेल के लाइन सिवि से केटा तक गइल बा। जब हमार गाड़ी बोलन दारा में रेल के पटरी पर धीरे २ चढ़ाव पर चले लागल त बोलन दारा के दृश्य अइसन बुझाय कि जइसे केहू अगवानी करे खातीर दूनो ओर बाँह पसार के मिले के तैयारी कइले होखे। पहिले त दारा मोलों चौड़ा दिखायी देत रहे। लेकिन जइसे-जइसे भीतर गाड़ी जाये लागल वोइसे-वोइसे चौड़ाई कम होखे लागल। सिवि से केटा तक पक्की सड़क रेल के लाइन के साथे-साथे गइल बा। कतहुँ-कतहुँ त दारा के चौड़ाई २० फीट से ज्यादे नइखे। अइसना जगह पर पहाड़ काटि के सुरंग बनावल बा वोही से गाड़ी पार करेले। अइसन करीब-करीब १८-२० जगह बा।

पक्की सड़क से उँट पर माल लाद के ओने के आदमी नीचे सिवि, शिकारपुर तक व्योपार करेले। आरा-ससराम लाइट रेलवे अइसन बोलन पास में साथे २ गाड़ी और सड़क के इन्तजाम बा।

केटा से नीचे मच्छ सेन्टर जगह ह जहाँ शायद दूनिया में बहुत ज्यादे गर्मी पड़ेला वोहीजा बिलोचिस्तान के सेन्ट्रल जेल बा। सिवि आ मच्छ के बीच के जतना स्टेशन देखे के मिलल सब आग लगा के जारल रहे। मच्छ में सस्ता में फल ताजा चाहे सूखल मिलत रहे।

आधा घंटा आपन थकावट दूर कइला का बाद गाड़ी फेनु आगे केटा के तरफ चलल। पहाड़ के बीच में भूल भुलैया नियन पैतरावाजी पर केटा पहुँच गइलीं जा।

केटा समुद्र के सतह से ५६०० फीट के उँचाई पर बसल बा। चारो तरफ उँचे-ऊँच पहाड़ से घेराइल बा। १९३४ के भूकम्प में समूचा केटा एकदम नापाता भइल रहे। फेरु से एक मंजिला ज्यादा से ज्यादा दूमंजिला मकान पक्का के साफ सुथरा बड़ा सुन्दर लागेला। फल के तिजारत के बड़ा भारी बाजार ह। वोहीजे से समूचा हिन्दुस्तान में फल जाला। वोहीजा चमन, कन्धार और केटा के आस पास से सेव, अंगुर वगैरह उँट पर लाद-लाद के वोही जा फेंड़ नीयन पेटी गँजाइल रहेला।

केटा में सिनेमा वोह घरी तीन चार गो रहले स। मार्च्छ बाजार वोहीजा के सराय ह जइसन लाहौर में हीरामंडी आ बनारस दालमंडी महाला बा।

सिवि से केटा तक कतहु पेंड़ रूख नइखे। कवनो किसिम के हरीअरी, सिवाय फल के बगान के देखे के ना मिले। केटा शहर में त फेंड़ वगैरह फूल पती बा। सड़क खूब चौड़ा-चौड़ा, साफ सुथरा दोकान पर तन्दूर के रोटी, गोस्त सबजी खाए के मिलेला।

एक होटल में हम खाये गइलीं। डेढ़ फूट चौड़ा छिपा में तरकारी, टमाटर, अंगुर के चटनी हाथ भर लम्बा चौड़ा चौथाई इञ्च मोटा रोटी खाये के मिलल। एही तरह के रोटी वोहीजा बनेला।

तरकारी आठ आना प्लेट, टमाटर दु आना के एगो, पाव भर अंगुर के चटनी एक आना के, रोटी के दाम दू आना। हर चीज के दाम अलगे-अलगे लागे

www.bhojpurisahityangan.com

ला। अतना सस्ता रोटी हिन्दुस्तान भर घुमलीं कतहुँ ना मिलल।

बरखा बोहीजा बहुत कम होखे ला। अइसन बरखा ना होखे कि जवना से खेती वगैरह हो सके। पहाड़ के खाई में बर्फ गलला से पानी जामा रहेला जवन पीये के काम में आवेला चाहे बोह से फल-ओल के बागवानी होला।

एहीजे सरकार के खेती विभाग के नुमाइस के जगह बा। जवना में नाया तरीका से खेती करे के देखावल जाता लेकिन बोह तरह के खेती होत कतहुँ ना लउकल।

आम जनता बहुत मूर्ख बा। पढ़े लिखे के देहात में कतहुँ इन्तजाम ना बुझात रहे। सब किसान ऊँट रखले बाड़े। इहे उनकर जीवका बा। मकान दू तरह के बा। माटी के देवाल, माटी के छत जइसन पंजाब में घर बनेला। दोसर बा तननी, जइसन हमनी का तरफ भइँस लेके घुमे वाला कपड़ा तानि के बगइचा में रहेले। देखला पर त बुझाला की गरीबी आदमीन्ह के पीठीअवले फिरता आ बहुत ऊँचा भइला के वोजह से बोहीजा बाड़ा हवा लागेला जेह से हरदम जाड़ा परत रहेला। जेठ में भी हमनी का कमरा ओढ़ के बैरक में भीतर सूतत रहीं जा। जाड़ा में त अतना जाड़ा पड़ेला की पानी जमे लागेला।

हम पहिले लिखले बानी की हवाई अड्डा बोहीजा काहे बा। ऊ बात कहत बानी।

जवना घरी समुन्दर चाहे आसमान से हिन्दुस्तान में आवे के रास्ता ना मालुम रहे। बोह घरी त हिन्दुस्तान में आवे के दूगो मसहूर रास्ता रहे। एगो के नाम बोलन दारा दूसरा के खैबर दारा ह।

एही बोलन दारा में पहिला जमाना में यूरोप तक के लोगन के साथ आवा-जाही, व्योपार, तिजारत चलत रहे चाहे दुशमन के रूप में भी बोने के लोग एही राहता से चढ़ाई करस।

अंगरेजी सरकार के जमाना में बिदेसी आदमी पर नजर राखे खातीर चाहे मोका-कुमोका दुसमन के हमला रोके खातिर केटा के चारो तरफ फौजी छावनी बनल बा। जवना में हिन्दुस्तानी आ अंगरेजी सिपाही रहत रहले और सुमंगली में हिन्दुस्तानी हवाई सेना के एगो बेड़ा बोहीजा रहत रहे। जवना में लड़ाकु जहाज, डकोटा वगैरह रहत रहे। एह समय ऊ जगह पाकिस्तान में परल बा। अब त पाकिस्तान का बोने केटा एने कराची से लेके काश्मीर के सिवाना तक के लम्बा हिन्दुस्तान पाकिस्तान के सीवाना के भी इन्तजाम कपारे पड़ल बा।

गीत

[श्री गणपति पाण्डेय 'संकेत']

ई अँजोरिया राति कइसन ?
ई त लागता डेरावन,
भूत अइसन बा भेआवन,
ना ई भादो ना ई सावन
फिर अँजोरिया काहे अइसन ?
भकसी अइसन राति जाई,
अब अँजोरिया आगई भाई,
कहल ई सब बात गाई,
पहिले जइसन आजु तइसन।
अबही परिबे दूज का बा,
आ कि भूलले नाँव का बा,
आधे-आधे दूनों का बा,
ना देखाइल सुनलीं जइसन ?
ई अँजोरिया रात कइसन ?

www.bhojpurisahityangan.com

—॥ मट्टी क बरतन ॥:—

['सरोजेश' गाजीपुर]

कुन्डा—(मिट्टी का एक ऐसा बड़ा सा पात्र जिसमें पानी, राब आदि तरल वस्तुएँ रक्खी जाती हैं)

कमोरी—(गुन्डा से छोटा किन्तु मुँह का बड़ा पात्र)

कमोरा————————————,,

काँटी————(तेल तथा घी के रखने का पात्र)

कँहतरी————(दूध आदि उबालने का पात्र)

कसोरा————(दीया से कुछ बड़ा पात्र)

कुल्हड़—(पुरवा भरूका, सोबरना—पानी तथा दूध आदि पीने का पात्र)

कोसी—(पियाली, मलिया—तेल रखने का पात्र)

कोहा————————————

कढ़वा————(पानी निकालने का पात्र)

हउदि—(नाद बहुत बड़े मुँह वाला पात्र जिसमें विशेषकर बैल आदि पशु खाते हैं)

हाँड़ी——(पतुकी भोजन बनाने का पात्र)

परछा——(अंचार तथा गुड़ आदि रखने का पात्र)

परछी————————————,,

परई—(अन्य पात्रों का मूँह ढकने के काम आता है)

परनोहा—(प्राचीन काल से ग्रामों में नावदान के उपयोग में आता है)

टिल्ली—(घइला)—पानी भरने तथा रखने के उपयोग में आता है, गगरी)

ठिल्ला——ठिल्ली से बड़ा होता है

दीया———(दीपक प्रकाश करने के काम आता है)

दियरी—(दीया से छोटा पात्र प्रकाश करने के उपयोग में आता है)

दीवट———(दीया रखने के उपयोग में आता है)

दसाँगदानी————(धूप दिया जाता है)

भरूका——(सोबरना)

भरूकी————(भरूका से छोटा होता है)

डिबरी——(दिया से भिन्न शक्ल का ऐसी वस्तु जो प्रकाश करने के काम आता है)

ढकनी———(ढकने के काम आती है)

ढेकुल—(कुँड़ कुएँ से पानी निकालने के काम आता है)

टुइयाँ——

मेंटा——

मेंटी——

मृतवान——

मधुकरी——

मटीही कराही——

मटुकी————(पानी भरने के काम आता है)

मटका——

सुराही—(झाँझर)

सईका————(रस ढोने का पात्र)

सबकनी———(सईका से छोटी होती है)

सतइसा——(सत्ताईस छेद वाला पात्र विशेष, जो शूलशान्ति के समय काम आता है)

गमला——

गुलदस्ता——

चीलम——

गँजहीचीलम——

गिलास मांटीक——

चौघड़——

चौघड़िया——

नादी——

लबनी——

गुड़गुड़ी——

चरिया——

घूँचा——(दूध दूहने का पात्र)

बोरसी——

बोरिका——

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कहाउति

[श्री परमेश्वरी लाल गुप्त एम. ए. आजमगढ़]

अ

१ अहिर मिताई तब करें,
जब सगरो मीत मरि जाए।

२ अइने कै टइने, न टइने कै टिटोर।

३ अलबेली गुजरिया, बड़हर कै भुमका।

४ अगहन रजपुत, अहिर असाढ़
भादो भइँसा चइत चमार।

५ अन्हरा चाहे दुई आँख।

६ अन्हरा के आगे रोवे,
आपन दीदा खोवे।

७ अपने मन कै जौकी,
भात पकाई कि लौकी।

८ अँगुरी धरत-धरत पहुँचा पकड़ लैहलैं।

९ अन्हरै सियार के पिपरें मेवा।

१० अकुताइल कोहाइन चुतरे से माटी खनै।

११ अव्वर के मेहरारू, गाँव भरै कै भौजाई।

१२ अइसन होती कातन हारी
काहे फिरती गाँड़ उघारी।

१३ अँधरे के भँइस बिआइल पड़िया,
गाँव के लोग ले दउरल हड़िया।

१४ अपने, अपने गइलैं,
आठ हाथ के पगहौ लेत गइलैं।

१५ अनारी गोद देखले कहैं,
मौसी पाव लागीं।

१६ अपने के अलहिजा दूसरे के गंडा पूरे।
अइसन होलैं साधु; त घरही दरबार लगौलै।

१७ अव्वर पउले बनियाइन,
नाप देहले डेढ़ सेरी।

आ

१ आपन ढेंड़र ना देखे,
आन के फुल्ली निहारे।

२ आगे-आगे लोलवा, पीछे से खटोलवा।
लेचल लोलवा, देसवा के ओरवा।

३ आन के पनियाँ में भरो ओसारो भरे कहाँर।

४ आन्हर गौरइया, भरसाई में खोंत।

५ आप भला तो जग भला।

६ आपन पत अपने हाथ।

७ आन क आटा आन क घीव,
शंख बजावस बाबाजीव।

८ आन्हर गइली भुँजावे।
फूट गइल खपड़ा लगली गावें।

९ आँख एको नाय कजरौटा नौ ठे।

१० आगे नाथ न पाछे पगहा
खाय मोटाय के भइलैं गदहा।

११ आन्हर चोदी दिनवें भूलैं।

१२ आवै न जाए ठाठ मुंसी गीरी।

१३ आगे मनुवा खीर न खाय,
पाछे से पनडोहा चाटे।

१४ आप आप गइले
साथे बांड़ा के लेले गइलैं।

१५ अन्हरन में कानवा राजा।

१६ आन्हर कूकुर बतासै भूँकै।

उ

१ उठा बूड़ा साँसिला, चरंखा छोड़ा जाँत ला।

२ उँचवापै चढ़के देखा घर-घर एकै लेखा।

३ उकटी क खाय निकटी क न खाय।

४ उखाड़े के भाँट नाही नाँव बरिआर सिंह।

ऊ

१ ऊँटे कै पाद न जमीन में न आसमान में।

२ ऊँट के नटई में बकरी।

३ ऊसर मरन बिदेस तेहू पर कुछ आउर बाय।

४ ऊँट के मुँह में जीरा।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के लोक साहित्य अंक पर
'आज' के राय

भोजपुरी का प्रस्तुत विशेषांक भोजपुरी लोक साहित्य के विभिन्न अंगों पर अच्छा प्रकाश डालता है। डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय का 'भोजपुरी लोकगीत की स्वर-लिपि' शीर्षक लेख एक सर्वथा नवीन विषय प्रस्तुत करता है जिसपर अभी बहुत कार्य करना है। इसके अतिरिक्त ऋगवेद से 'इन्द्र भगवान' संबंधी मन्त्रों का भोजपुरी में पद्यानुवाद और रूसी उपन्यास 'बोरो' का अनुवाद भोजपुरी साहित्य को समृद्ध बनाने की दिशा की ओर किए गए प्रयास हैं और उसकी अभिव्यक्ति की व्यापकता दिखलाते हैं। "विआह के लोक गीत', 'लोक कथा', 'मधेसी आउर थारू भोजपुरी', 'बनारसी भोजपुरी के रूप' आदि लेख भी पठनीय हैं। 'घेरि-घेरि उठें बदरा', 'उठ जाग तेहूँ देख जवाना बदलल जात बा' शीर्षक कविताएं भ सुन्दर बन पड़ी हैं।

केशर के चितचोर

[श्री भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु']

चितचोर, चिनगारी महिनवारी पतिरिका के जनवरी १९५३ के अंक ह। एकर मुदरक आ परकासक हवन जे. पी. कुशवाहा। ई चिनगारी प्रेस, बनारस में छपेला आ चिनगारिये परकासन बनारसे से करीब १५ बरिस से निकलबो करेला। आ एह अंक में ज्वाला प्रसाद 'केशर' के लिखल 'चितचोर' उपन्यासे छपल बा एही से एकर नाँव 'चितचोर' धराइल बा। एह अंक के दाम सवा रोपेया बा। ई अंक किताब अइसन एगो उपन्यास के लेके निकलल बा। अखबार के अखबार आ किताब के किताब। एही से एकर दाम सवा रोपेया बा।

उपन्यास के कथा के सुरूम बड़ा लोभावन ढंग से भइल बा, जवन एक सम्पादक खातिर सुभाविक बा। एकरा के सुरू कइला प बे खतम कइले मन का छोड़ल त दूर रहो सुस्ता हूँ के मन नाकरी। आ बे सुस्तइल हूँ ऊ एके साँस में पढ़िओ सकेला काहे से कि आगे चलला प कथा बहुत जल्दी-जल्दी खतम कर देल गइल बा। बुझाता कि लेखक बहुत जल्दी में एकरा के लिखले बाड़न। अगर अउर थोरा एमें समय लगाइवल जाइत त कथा बड़ होके कुछ जादे बढ़ियाँ आ गम्भीर हो जाइत। जलदिये का वोजह से बुझिला नामन में ढेर जगह रजनी का जगह चन्दा आ चन्दा का जगह रजनी हो गइल बा। लेखक का दोबारा बुला आपन पाँडुलिपि पढ़े के सावँसोना लागल हा। काहे से कि कम्पोजिटर के गलती नइखे बुझात। कथा आदी से अन्त तक दुखान्ते बा, कहीं परधान पात्रन का कुछुओ दिन सुख-चैन से नइखे वितल, सिवाय प्रभात आ मंजु के छोड़ के जे लोग खाली रजनी के जीवन के पूरा करे खातिर लेल गइल बा।

एकरा के पढ़ते ई मालूम हो जाता कि केहू नया विचार के लेखक के लिखल ह। काहे से कि एह में पुरान परिपाटी के पालन सुरू से लेके आखिर तक कहीं नइखे लउकत बलुक एकर हर बात एगो नये

www.bhojpurisahityangan.com

तरिका लेले बा। ई पूरा-पूरा लेखक के खुद अपना अनुभूति के परचो दे रहल बा। लेखक आपन बिचार खुलि के लिखे में बहुत जगह सरमा गइल बाड़न बाकी तबहूँ असलियत छिप ना रहे। कहीं-कहीं खुलिये गइल बा। अपना बिचार के सही-सही रूप पढ़े वालन का सामने रखे में लेखक का ओकरा अचऽाई का बारे में सँका होखे लागल बा, एही से जगह-जगह कुछ बात इसारा से कहि के छोड़ देल गइल बा आ कहीं-कहीं ओकरा के अभुरावे के कोसिस कइल गइल बा।

अइसे पात्रन में कहीं कमी नइखे, सुभाविक गुन से भरल बाड़न स। पढ़ला से कहीं टुटी नइखे पावल जात। हाँ, जो बहुत धेयान से देखल जा त खाली एक जगह तनिकासा कुछ कहल जा सकेला। रजनी मृदुल प सन्देह कके, भला-बुरा बकके नइहर चल जातीया। मृदुल का एह से बहुत बड़ ठेस लागता। होइबे करेला, बिना जर के बात से अदिमी का दुख होइबे करेला आ ओकर फलो इहे होला कि दोस लगावे वाला के जीव-जान से मानतो रहला प ओकरा से जब देखा-देखी हो जाला भा बात-चित होखे लागेला त सभ बात जाँता जाला आ खाली उहे ठोना वाली बात इयाद हो जाला जेह से अदिमी उखड़-उखड़ के बोले लागेला आ बनलो बात बिगड़ जाला। सभ कुछ बुझिओ के अदिमी कुछ कर ना सके आ बहुत बड़ से बड़ घाटा तनिसा बात खातिर उठावे लागेला। इहे हाल रहे मृदुल के, जबना बात के लेके रजनी रंजहो गइल, ऊ बात ओह घरी मृदुल में ना रहे बाकी कुछ दिन का बाद रजनी के अभाव में ऊ होइओ गइल। इहे तनिसा खटकता। काहे से कि ई अगर होखे के रहे त रजनी का जाते जल्दिये हो जाये के चाहत रहे काहे कि अइसनो होला कि जबना बात के कवनो जर-बुनियाद ना रहे आ ओही बात खातिर केहू के जोर देके केहू दोस लगावे भा सँका करे त ऊ आदमी ओइसने करे लागेला ई सोचि के कि आछा जो कहते बाड़ऽ त अबले त ना करत रहलिहँ बाकी अब करब। आ एह में एगो दोसर चीज ई होला कि जाय द, जेकरा जे बुझाला से कहेला अपना ठीक रहे के चाहीं। ईहे बात मृदुल कइलन बाकी आगे जाके बिचिल गइले, अपना राह से। इहो एगो महमूली बात से। पारक में एगो जोड़ी के रंगरेली देखते उनकर दिल बदल गइल आ चट घरे जाके खट से संजम तूर के मुँह में करिखा लगा ले ले। इहाँ उनकर कमजोरी झलकता। एह से कुछ लोग का ई ना भी जँच सके। आ रजनी के भरम दूर करे खातिर कुछ उपाय करे के चाहत रहे, इहो उनका चित्रन में एगो चीज छूट गइल बा।

अइसे मृदुल के दोस्त के प्रति कर्त्तव्य-पालन में बहुत बड़ तेयाग बा जबना के बराबरी के चीज बहुत कम देखे में आवता। चितचोर के पूरा क के चन्दा अलोपित हो गइल बीया, इहाँ लेखक कमाल कइले बाड़न, साँप के साँप मरल आ लाठियो ना टूटल। उपन्यास अपना असलियत का साथ पूरा भी हो गइल आ चन्दा आ मृदुल सभका खातिर नमूना भी बन गइलन। चन्दा का रहला प ई बात ना हो सकित।

भासा के बारे में इहे कहल जा सकेला कि बहुत मार्मिक कथानक होखे का वोजह से इहो ओकरे साथ देलेबा। बात बाजे जइसन कथा होला, ओकरा के समुझावे खातिर ओइसने भासा भी चाहीं। एह में लेखक पूरा सफल भइल बाड़न। नवही के दिल, जँहे-तँहे झट से झटका खा गइल बा आ चिनगारी उड़े लागल बा। पात्रन के बात-चीत के सिलसिला में लेखक कहीं-कहीं अतुना ऊँच उड़ान से काम लेले बाड़न कि भासा के समुझे खातिर रेखा गनित से काम लेवे के परता। जे रेखा गनित ना जानत होई ओकरा कुछ कठिनाई जरूर होई।

छपाई-सफाई का बारे में त हम इहे कहब कि नवहिये लोग एकरा के बढ़ियाँ से पढ़ सकेला आ समुझ सकेला, काहे से कि चलिसा लागल लोग बिना दूगो आँख खरीदले दिनों के पढ़ ना सके।

www.bhojpurisahityangan.com

जइसन देवता ओइसन पूजा

[श्री वीरेन्द्र किशोर सिन्हा बी० ए०]

दृश्य-पहिला

असथान-सिखावन सिंह के मकान

(सिखावन सिंह मन मरले कपार पऽ हाथ धऽ के खटिया पऽ बइठल बाड़न आ गते-गते गुन-गुना ताड़न तले उनकर सँघतिया बतावन सिंह आवऽ तारन।

अइसन करमवाँ के हाल भइल !
ढेवुआ घटल, दुख गँवे समाइल,
जिनिगी हमार जँवजाल भइल !
लइकी बिआहीं कि खरची चलाईं,
बड़की के तीलक कइसे जुटाई
सपना बंनल सुख, निनिया मोहाल भइल !
मालिक गरीबवन पर अब कब ढरबऽ,
उनकर बिपतिया के कबले टरबऽ,
आँखि भरे झर-झर गाल दुइ नाल भइल !
अइसन करमवाँ के हाल भइल।

बतावन—काहे सिखावन भाई, अइसे मन मार के काहे बइठल बाड़ऽ ?

सिखावन—(दुख से) का कहीं ए बतावन भाई, नीमन कुल खनदान के इदिमी गरीब हो गइला पऽ केनिओ के ना रहे। आ ओकरा एगो लइकी होखे त जान जा कि ओकर जिनगी इमिरिथा बा।

बता—अइसे काहे बोलऽतारऽ हो ?

सिखा—(आजिज होके) बोलीं ना त का करीं। हउ बा नु घांखपुर के चंटसिंघवा, पाँच हजार से कम पऽ बाते नइखे करत।

बता—ओ, त बड़की के बिआह चंट सिंघ के हियाँ ना ठीक भइल। तीन हजार पऽ नइखे मानत का ?

सिखा—तूँ तीन हजार के कहऽ तारऽ, ओकरा सोझा केहू कुबेर के भांड़ारो उझिल देवे तबहुँओ ओकरा संतोख ना होई।

बता—कुछ अवरू कम करे के ना कहले रहऽ ?

सिखा—आरे हम जसहीं कहनी कि सरकार रउरे सरन में बानी कुछ अवरू कम कऽ देल जाव तसहीं गेहुमन अइसन फुफुकार के कहऽता कि "चलीं-चलीं, रउए मुँह बा हमरा बी० ए० में पढ़े अवला सुभेख लइका से बिआह करे के। जाईं-जाईं कवनो घँसगाढ़ा के गरदन में अपना बेटी के बान्ह दीं। 'खाये के जुरे ना दरी बिछवना।" त का कहीं ए बतावन भाई हमरा आँख से ढर-ढर लोर चूए लागल। बाकि ओकर पथर के करेज काहे के मोम होख जाव।

बता—(बिगड़ के) हमरा जियते-जिनिगी उ तोहरा के अइसन बोल देलस सिखावन ! एकर बदला लेला बिना हमरा कल ना पड़ी।

सिखा—जाये द, सभ इदिमिन के आपन-आपन सुभाव होला। चलऽ नीमन जतरा देख के कतहीं दोसरा जगे लइका खोजे चल दीहीं जा। चंटसिंघवा से लड़ला से कवनो फैदा ना इकली। उ एक लम्मर के भितरघांक ह।

बता—ना हो, हमरा भाई के करेज में ऊ आपन बात के बरछी गड़ा देलस, ओकरा के हम छोड़ब। ऊ सिखान सिखाइब कि मामा के उठत-बइठत

www.bhojpurisahityangan.com

खात-पीयत इयाद रही। तूँ घबड़ात काहे बाड़ऽ हम उपाय बतावतानी नु।

सिखा—(घिघिया के) नूँ त ढेर मुलुक घूमल, आ संसकीरित पढ़ल बिदमान हवऽ। ई बीपत से तुहीं हमार उबार करऽ।

बता—आछा त सुनऽ। चंटसिंघ के हियाँ छोटकी के बिआह कऽद। आखिर ऊ कान, पागल आ करियाभुचेंग के काहाँ बिआह होई। तुहुँ त ओकरा खातिर फिकिर में पड़ल रहेलऽ। आ देखावे के कहिहन त बड़की कें देखा देल जाई। भाला ओकरा के देखके के बिआह ना करी। तद देखिहऽ कि जब पगली उनका हियाँ जाई त उनका कइसन तितिकी लेसी। जइसन देवता ओइसन पूजा। आ हमनी के का। कहल कि भइल बिआह मोर करवऽ का।

सिखा—से त ठीक बाकिर रोपेया काहाँ से आई।

बता—कुछ तोहरा भिरी बा नु, बाकी हम देवे के सकारऽतानी। छोटकी के बिआहो हो जाई आ चंटसिंघ के दिमागो ठंढा हो जाई।

सिखा—हम तोहार ई उपकार जिनिगी भर ना भुलाइब बतावन। तुँ हमरा कपार प से लमहर बोझा हटा देलऽ।

बता—आछा त छोड़ ई कुल्ही उदासीं, आ चलऽ काल्हे घाँखपुर चलीं जा।

सिखा—(जोर से) बबुआ बुझावन, आरे बतावन चाचा के गुड़गुड़ीओ उड़गुड़ी ना पिअइबऽ।

बता—ना ना एघरी हम तमाकू ना पीअब। हम जातानी। आच्छा सलाम।

सिखा—सलाम भाई।

(बतावन जा तारन, परदा गिरऽता)

—:०:—

दृश्य दोसर।

असथान-चंटसिंह के मकान

(परदा उठऽता, चंट सिंह खिसिआइल आवऽ तारन)

चंट—(जोर से) गबुदना रे, आरे गबुदना के सार।

गबूदन—(भीतरे से) ओय……।

चंट—नइखऽ सुनत ससुरू! किरिन फूट गइल आ अबहीं तकले तोहरा ओंघिए लागल बा! मारब अइसन तबड़ाक कि मुँह ऐने से ओने घूम जाई।

गबू—(आके) हइका आगइनी सरकार।

चट—तोरा से हम बीस दफे कहनी कि लगन के दिन बा, सुपातर बबुआ के देखे खातिर कतना अगुआआवऽतारन स तें खूबे भिनसहरे उठ जाइल कर। बाकिर लात कें देवता बात से कबही मनलनह। अबहीं दरी, जाजिम आ मसलंद लगाव ना त मारत २ पिलहिए सटका देब।

गबू—अबहीं लगा देतानी सरकार। (जाता आ फेन तुरते आवऽता) बाकिर सरकार, ए धरमा अवतार अब त इजते जाये चाहऽता।

चंट—इजत जाये चाहऽता? काहे रे?

गबू—लपेटपुर के बाबू सिखावन सिंह जी त आ गइनी।

चंट—तूँ ससरू जे ना करावऽ। आछा बोलाव ऊ लोग के आ बिछाव जाजिम आ मसलंद।

गबू—आछा सरकार।

चंट—(अपने से) अबकी जे तीजक कम करे कें कहिहन त ठीक पटरियो ना खाई।

(सिखावन आ बतावन आवऽतारन)

चंट—परनाम बाबू सिखावन सिंह जी!

सिखा आ बता०—परनाम सरकार

चंट—(जोर से) गबुदना! आरे गबुदन!!

गबू—(आके) जी सरकार।

चंट—जी सरकार के नाती, देखऽतारन कि दुआर प दुगो भलेअमदी आइल बा त होने काहाँ दो अपना ननिअउरा चल जातारन। अबहीं बिछवना

www.bhojpurisahityangan.com

बिछाव ना त टँगरी पकड़ के बजार देब कि ओराइए जइबे।

गबू—खिसआत काहे बानी सरकार बिछावते नु बानी।

चंट—(एकदम बिगड़ के) जादे बोलबे नु त जान जो कि सै जूता मारब आ एक जूता गीनब।

सिखा—जाये देल जाव सरकार, नोकर-चाकर के ढेर मुँहे ना लगावे के। हमनी का ठढ़े ठीक बानी जा।

चंट—ना बाबू सिखावन सिंह जी, एकनी से त सोझा मुँहे बोलले पाप ह। कहल कि बड़ जात बतिअवले आ नान्ह जात लतिअवले। आ तुलसिओदास जी लिखले बानी कि

'शूद्र, गँवार, ढोल, पशु, नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥"

बता—अपने के त तुलसीदास के खूबे पढ़ले बानी नु!

चंट—हें हें हें हें, हम पढनी त कवन भारी काम कइनी हमार सात पुसुत पढ़ के मू गइल। आ जानत नइखीं, जा घरी तुलसीदास जी रमाएन लिखे बइठल रहनी हाँ ओघरी उहाँ के ना खाये के फिकिर रहत रहे ना पीये के। आ ओघरी हमरा छरदादा के लकड़दाद्धा उहाँ के अपने हाथ से खिआवत-पिआवत रलन हाँ।

सिखा—तब त उहाँ के बाड़ा खुस भइल होखब नु।

चंट—आरे कहते बानी, खुसी में नाच के तुलसी दास जी असीरबाद देलीं कि जा, तोहरा कुल में कबहीं पइसा ना कम होखो।

बता—आ उहें का नु कहले बानी कि

"कामिहि नारि पियार जिमि, भक्तन के प्रिय राम।
तैसेहीं मोहे लागिहौं, तुलसी टका-छदाम॥"

चंट—हें हें हें हें, अपने के भाला गलती कहब। उहें के कहला से नु हमु दमड़ी खातिर चमड़ी हींच लेबे के तइयार रहीला।

सिखा—धन्न हईं सरकार।

चंट—आछा ई त बताईं कि तीलक मंजुर बा नु?

बता—राम कहीं सरकार, बे मंजूरे भइले अतना लमहरा से टँगरी घिसिआवत आवऽतानी जा।

सिखा—हमनी का तनी लइका देख लेबे के चाहऽतानी जा।

चंट—हँ जरूर देखीं। गबुदना रे, तनी सुपातर बबुआ के भेज दीहे त। (कुछ ठहर के) देखीं ना हउका आवऽतारन।

सुपातर—(आके) क्या है पिताजी, ये लोग कौन हैं?

चंट—इनकर गोड़ छूअ, इहाँ के तोहार ससुर हईं।

सिखा—जिअत रहीं बबुआ, जुगे-जुगे कलकल अइसन पसरत रहीं।

बता—आ ताड़ अइसन लमहर होईं। बी० ए० में नु पढ़ीला बबुआ?

सुपा—हाँ हाँ मैं बी० ए० का स्टूडेंट हूँ। डी० एच० लारेंस को जानता हूँ, एमिली जोला को पढ़ा है, बायरन के 'ए ब्राइड्स कान्फेशन' को पढ़ा है, अरे किसको मैंने नहीं पढ़ा।

बता—रंगरेजी त ना, बाकिर गाँव के पंडित लोगिन के साथे रहत र हमहुँ इचि संस्कृत जानीला।

सुपा—उस संस्कृत में अब क्या रखा है। डेड लैंग्वेज है डेड लैंगवेज।

बता—इ त रउआ लोग कहबे करीला। हम ई राउर डेड लैंग्वेज ढेर सुनले बानी अबहिएं जब रउरा बिअहे जाइब त जतना काम देखब से सभ संस्कृत में। खैर जाये दीं, कवना डिभीजन में एफ० ए० पास कइले रहीं बबुआ?

सुपा—रॉयल डिवीज़न, रॉयल डिवीजन।

सिखा—इ रेल डिभीजन कवन डिभीजन ह बाबू?

बता—हँ बबुआ, अतना मुलुक घूम अइनीं बाकिर हमहुँ ई डिभीजन नइखीं सुनले।

www.bhojpurisahityangan.com

सुपा—रेल डिवीजन नहीं रायल डिवीज़न, रायल डिवीज़न मतलब कि राजसी डिवीजन। आया समझ के बीच में ?

सिखा—हँ बबुआ बुझाइल।

चंट—अपने सभे के लइका पसन बा नु ?

सिखा—भाला कहीं सरकार, अइसन लइका केकरा ना पसन पड़ी। कइसन कबूतर अइसन घुटु-घुटु घुटकऽतारन कि सुन के हिरदेया जुड़ा जाता।

चंट—त हमु लइकी देखलीं नु ?

बता—हँ-हँ, जरूर देखल जाव, आँख खोल के देखल जाव, सरकार।

सुपा—पिताजी, मैं भी लड़की देखने चलूँगा।

बता० आ सिखा—हे भगवान !

चंट—ना चुप रहबऽ, सात पुसुत में जवन ना भइल तवन तूँ करे के चाहऽतारऽ।

सुपा—तो आखिर लड़की देखेगा कौन ?

चंट—हम देखब हम, आउर के देखी तोहार बाप।

सुपा—ठीक है, अगर आप लड़की को देखिएगा तो मैं लड़की की माँ को देखूँगा। क्योंकि शेक्सपियर ने लिखा है कि "Thou art thy mother's glass, and she in thee calls back the lovely April of her prime" अर्थात् तुम अपनी माँ का आइना हो, और वह तुममें अपनी जवानी के दिनों को देखती है। तो जब लड़की को देखकर माँ का अनुमान किया जा सकता है तब माँ को देखकर लड़की का पता आसानी से लग सकता है।

सिखा आ बता—छि छि ! इ त घोर कलजुगे आ गइल नु !

चंट—तूँ ना मनबऽ सुपातर; उठीं हम ?

सुपा—अच्छी बात है। अगर आप लोग इस पर भी राजी नहीं होते तो मैं सिर्फ पिताजी के साथ जाऊँगा। घर-द्वार देखकर ही मैं लड़की के बारे में जान लूँगा। हमलोग तो 'खत का मजमून बताते हैं लिफाफा देखकर'।

चंट—आछा ठहरऽ, अबहिएँ हम सभ तोहार लंठइए भुला दे तानी।

(चंट सुपातर के मारे लागतारन)

सुपा—अरे नहीं पिता जी, मैं नहीं जाऊँगा, मैं लड़की नहीं देखूँगा, मैं जाता हूँ। (सुपातर भागऽतारन, चंट उनका पाछा लपकऽतारन, सिखावन चंट के रोक लेतारन)

सिखा—जाये देल जाव सरकार अब त बबुआ जी मान गइनी नु।

चंट—ना साहेब, ई पूरा घइंचट के अवलाद ह। गदहा बराबर हो गइल आ अब हीं तकले एकरा बोलहुँ के सहूर नइखे। अपने सभे के कवनो दुख नइखीं नु मनले ?

बता—राम कहीं सरकार, आजकाल के लइका लोग त अइसन होखबे करेला।

सिखा—हँ ए सरकार, एह में बबुआ जी के इचिको दोस नइखे।

चंट—आछा त हम काल्ह उपरी बेरा लइकी देखे आइब।

बता० आ सिखा०—बहुत आछा सरकार, सलाम

चंट- सलाम, सलाम।

परदा गिरता

दृश्य—तीसर

(परदा उठऽता। चंट सिंह खूबे खुस मन से बाहर से आके छड़ी, मुरेठा आ चद्दर उतार के पुकारऽ तारन)

चंट—सुनऽतारु हो, ए सुपातर के मतारी सुलाखन !

सुलाखन—(आके) आ गइनीं ! कहीं—कहीं लइकी नीमन बीआ नु ?

चंट—लइकी के पूछऽ तारु, लइकी त छछात सुपनेखिया के अवतार बीआ नु।

www.bhojpurisahityangan.com

सुला—हाय रे करम, रउरा हमरा बाबू के बिआह कवनो राछसिन से ठीक कऽ अइनी। हम पहिल हीं जानत रनीहाँ कि राउर ई रोपेया के लोभ हमरा सुपातर के कतहीं के ना रखी।

चंट—एही से कहल जाला कि मेहरारू के नाक ना रहे त ऊ मइला खाय। हम त ओ घरी के सुपनेखिया अइसन कहनी जा घरी उ सुन्नर भेख बना के रामजी भिरी गइल रहे। तूँ का जानऽ, ओ घरी ऊ सीतो जी से जादे खपसूरत लागत रहे।

सुला—अइसे नु कहल जाला। हमार त पराने सुखा गइल रहे।

चंट—त हम तनी तोहरा के रिगइबो नु करीला। आ जाघरी तूँ खिसिया जालू चाहे डेरा जालू ओघरी साँचो कहऽतानी बड़ा नीमन लागेलू।

सुला—रउरा त बुढ़ारियों में चउले लउकेला। सुपातर बबुआ के देख के अगुआ सभ खुस भइल रहन स नु?

चंट—आरे तोहार सुपातर त सभ गुड़ गोबर कइले रहे। कबहीं कहे कि लइकी के देखब, त कबहीं कहे कि लइकी के माई के देखब। हउना कइसे दोनी बोलेला। हमरा ओइसे बोले आवऽता। ऊ त देनी दू मूक तब जाके इंट-सिंट बोलल छोड़लस। हम त कहीं कि ऊ भड़क मत जास। बाकि घांखपुर के जमीन्दार चंट सिंघ के दिमाग ह कि कवनो ठट्ठा ह। ऊ लकड़ी भरनी कि लोग के कुछ उकिते ना खुलल।

सुला—देखीं, हम रउरा के चेता देतानी, हमरा सुपातर के लेके जे रवा घोर-माठा कइले रहीला से ठीक नइखे। भंगवती जी के अतना मनता मनला से त एगो लइका जीअल। ओकरो के रउआ नइखीं देख सकत। एकरा खातिर घर में एक दिन बड़ा कुकुराह होखी।

चंट—कुकुराह त तूँ रोजे करेलू। का कवनो नाया होई। ऊ त कह हमार दिमाग कि हम तोहरा के नचवले रहीला।

सुला—रउरा हमरा के नचवले रहीला?

चंट—तोहरे के का, सउँसे सँवसार के नचवले रहीला। हइ देखतारु ऽ, कनगुरिए अँगुरिया प।

सुला—अतना उतान ना होखे के। अतना उतान जे होला ऊ भुँइयें गिर जाला।

चंट—चलऽ चलऽ, तोहरा बकबकइला से हमार का होखे के बा।

सुला—त देखब नु कि मुँह के उगिलल कनिया से बेटा के बिआहब। हमरा काहे दोनी बुझाता कि राउर रोपेया के लोभ हमरा सुपातर के जिनिगी के हेनवेना कऽ दी। दुनो बेरा भँगऽवऽती जी, से मनाइला कि हे भँगऽवऽती, हमरा सुपातर के नीमन कनिया से बिआह होई त हम हिरदेया खोल के रउरा पूजा में लुटाइब।

चंट—तूँ घबड़ात काहे बाड़ू। कनिया त अइसन बीआ कि आई त सउँसे घर अँजोर हो जाई। तोहार भंगऽवती जी के भाखल सवारथ हो जाई। आछा देखऽ, बिआह में कवनों देरी नइखे काल्हुए से एकरा में लाग जाइल जाई।

(दूनो लोग साथे २ जाता। परदा)

—:❀०❀:—

दृश्य—चउथा।

(रसनचउकी बाज रहल बा, मेहरारू लोग गीत गावऽता, कनिया आइल बाड़ी। रंगमंच प चंट सिंह बइठल देखल जातारन, एही बीच में कनिया के देख के सुलाखन रोवत-धोअत चंट सिंह के भिरी आवऽतारी।)

सुला—(रोवत) आरे दुसमनवा के करेज ठंढा भइल ए दादा। हमरा बाबू के जिनिगी बिग-

www.bhojpurisahityangan.com

बोरो

रूसी उपन्यास

लेखक— वाण्डा वासिलेवस्का

अनु०—श्री रघुवंश नारायण सिंह

(गतांक से आगे)

अपना छोटका हाथन से ऊ अपना बारन के कान का पाछा फेंक के सभूरवलस। ओकर बार चमकीला रहन स। ऊ अपना चमकत दाँतन से नीचे के ओठ काटत रहे।

"का ?"

ऊ फेनु अपना बारन के पाछा फेंकलस। ओकर लाल नोंह खूनी पंजा नीयर लागत रहन स।

"हूँ, ऊ हमार बहिन ह; एह से तोहार का ?"

"ओकर रूमान हमनी का ओर नइखे।"

पुसिया के गोल करिया आँख एक बेरा संका से चमक गइल।

"का तू ओकरा के चाहत बाड़ ?"

ऊ कह-कह लगा के हँसे लागल।

"ना, तू हूँ का समुझ ले लू। सुबर भइलो प हम मोट मेहरारून के पसंद ना करीं। उन कर गोंड़ ओइसने मोट बा जइसन'.....ऊ कह ही वाला

(पन्ना २५ से आगे)

ड़ल ए दादा! (एकदम रोवे लागऽतारी)

चंट—इहे सभ तु बेकुफी ह। हँसी-खुशी के दिन में ई तूँ रोहां-रोहंट का पसरलू।

सुला—(झटकला अइसन) रउआ कवन काम बा केहू हँसे चाहे रोये। रोपया सहींत के रखीं रोपेया। हमरा बाबू के करम में अगिया लागल ए रमवा! (रोवऽतारी)।

चंट—काहे कनिया त नीमन बीआ।

सुला—जाके देखीं त, कजरौटा अइसन कुच-कुच करिया, कान आ मन भरम बीआ कि ना।

चंट—(सोचत) त हमरा साथे धोखा भइल का!

सुला—रोपेया मिलल तु अबरू कुछ मिले चाहे नत मिले। बाकि हमु असल बाप के बेटी हईं। हमरा सुपातर के जिनिगी खराब भइल त भइल बाकिर हम अबहीं जाके राउर सभ रोपेया पइसा के चूल्ही में जार दे तानी। (रोअल)

चंट—बतिओ सुनबू ?

सुला—डेर हमार अन्त कोड़ब तु त हम जहर-माहुर खाके मू जाइब। आह रे, हमार एगो पतोह आ उहो अइसन। रोपेया तु पवले बानी लेके चाटीं रोपेया। हम अपना बेटा के लेके चलतीं नइहर।

चंट—अपना गलती पर हमरा अपने पछतावा होता। हमार घमंड चूरे-चूर होगइल। बाकिर तूँ हल्ला क बू त जान जा कनून बनल बा कि जे तिलक ली उ बन्हा जाई। कहीं कवनो मुदई जान जाई त हाथ में हथकड़िए लाग जाई। चुप रह चुप, सुपातर के दोसर बिआह कऽ देल जाई। कवनो कमी बा। (सुलाखन के 'चुप रह चुप रह' कहत चंट लिया जातारन, सुलाखन चुपचाप रोवत उनका साथे जातारी परदा)

—समाप्त—

www.bhojpurisahityangan.com

रहे कि "जइसन हमरा मेहरारू के" तले अइन मोका पर रूक गइल।

पुसिया, बड़ा नाज का साथे अपना सुघर गढ़न के गोड़न के देखलस।

'हाँ, ई त ठीके बा कि ऊ कुछ मोट बीआ...।"

"तूँ त कबहूँ ना कहलू कि तोहार बहिन एहीजा बाँआ।"

"हम काहे के कहे जाईं। ऊ इहाँ रहत रहे आ हम ऊहाँ।"

हमनी का खंचिते कबहीं एक दोसरा से मिलत रहीं जा। ऊ एक दम अलगे सुभाव के ह।"

पुसिया चिंता में डूबल अपना चेहरा प बिखरल लट के सकुरवलस। ओकर जड़ाउँ इयरिंग चमक उठलन स।

"ऊ लड़िकन के पढ़ावेले आ बराबर काम में लागले रहले। आखिर ओकरा एह से का मिलेला? कुछ ना। ऊ हर बतुस से संतोस कर लेले--सब चीजवे ओकरा के खुसी देलन स"।

"तब त साफ--साफ कहल जा सकेला कि ऊ बोलसेविक ह।"

"के जानता, हो सकेले।" सुस्ती का साथे ऊ कहलस आ तब अचके में तेज होके ऊ पूछलस। तू बार-बार ओकरा बारे में काहे पूछल, तू कहेल कि ओकरा में तोहार कवनो मोह नइखे आ तबहुँ ओकरा बारे में पूछत जात बाड़?"

हम असहीं पूछत रहीं। हम तोहरा के बिस्वास दिया सकत बानी कि हमरा अगर कवनो दिलचस्पी ओकरा में बा त एह खातिर ना कि ऊ मेहरारू ह।"

ओकरा जबान में जे एगो खास आवाज रहे पुसिया ओकरा के समुझ ना सकल। पुसिया सजग हो के पैताबा चढ़वलस आ बारन के रेशमी फीता से सजा लेलस। कप्तान अपना जेबी से एगो छोट पोटली निकललस। ओकरा के पुसिया का ओर बढ़ावत बोलल। ई थोड़े चाकलेटन के तोहरा के देबे खातिर ही हम कुछ छन खातिर चल अइली हाँ। हमरा तुरते जाये के बा आज हमरा बहुत काम बा, तूँ अपना के बचाव, आवे में हमरा देरी होई,

ऊ मुँह लटका के कहलस।

"अकेला, अकेला, समूचे दिन अकेला। ना जाने ई निगोड़ी लड़ाई कब ले खतम होई?"

"ई त खतम होइबे करी।"

"तोहरा खातिर त अच्छे बा कि बात.....।"

ऊ चाकलेट खाए लागल।

फेनु गिलास से दिल बहलाव, तोहार खाये के एहीजे आई। अच्छा बिदा।

चलत खानी बेमन के ओकर चूमा लेलस आ चल गइल। पहरा अबहुँ ओह झोपड़ी का सामने अपना गोड़न के थपथपा के गरमी ले आवे के कोरसिस करत रहे। अफसर के आवत देख के सजग हो गइल। कप्तान ओकरा सोझा से होके चउक का ओर चल गइल। ऊ बड़का घर, जवना में पहिले गाँव के पँचाइत के सभा होत रहे, आज फौजी सिपाही आ नायकन से भरल रहे। सजग से एक पाँति में खड़ा होके ऊ लोग ओकरा के सलामी देल। ऊहो जवाबी सलामी देलस। सिगरेट का धुँआ से सँउसे घर धुँआइन हो गइल रहे।

अफसरवा ओह कमरा के दरवाजा खोललस जवना में ऊ आफिस करत रहे।

"ओकरा के भीतर ले आव.....ऊ कहलस"।

ऊ अपना टेबुल पर बइठ के जम्हाई लेलस। ओकरा हिस्का होखे लागल पुसिया से, जे एह घरी बिछौना पर पड़ल होई। जब कि ओकरा दिन निकले का पहिले बिछौना छोड़े के परत रहे आ समूचे दिन अधुरा कामन से भरल पड़ल रहे। सिपाही लोग एगो मेहरारू भीतर हाजिर कइल जेकरा चाम के बनल जैकेट के नीचे करिया पोसाक लउकत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ बे विस्वास के नजर से ओकरा के देखलस।

"का इहे ऊ मेरारू ह?'

"हँ, ई उहे ह।'

ऊ टेबुल का सोझा भौचक से खड़ा रहल। ओकर कुछ बार साल का नीचे से बिखर अइलन स। ओकरा चेहरा से महमूली किसान अइसन सादगी आ रूखरापन टपकत रहे।

"तोहार नाँव?" ऊ पूछलस।

"ओलेना कौस्त्युक।, जवाब मिलल।

पिर्नासिन के अपना अँगुरी में नचावत अपना सोझा खड़ा ओह मेहरारू के ओर ऊ आपन नजर दउड़वलस। ऊ सोचलस कि चाहे त सिपाही लोग से गलती भइल रहे चाहे ओकरा चेहरा पर जे मजगूती के भाव बिखरल रहे ओकरा से साफ जाहिर होत रहे कि सवालन का भूल भूलैइया में डाल के ओकरा से कुछ भी जान लेल सहज ना रहे।

"का तूँ गोरिला लोग का साथे रहू?"

ऊ एह से चउकल नाहीं। ओकरा पर से बिना नजर हटवले ऊ जवाब देलस, " हँ हम गोरिलन का साथे रहीं।

"ओह! अच्छा, अइसन।"

ई बिना उम्मेद के सहज-कबूल ओकरा के अकचका देलस। अपना सामने पड़ल फूल के माला के ऊ अपना हाथ में लेके घुमावे लागल।

"बाकी तू गाँव में लवटलू काहे? आ ऊ लोग भेजलन काहे?"

"केहू हमरा के भेजलस ना, हम अपने मने अइलीं।"

"अच्छा! तू अपना इच्छा से अइलू। आखिर काहे?"

अब की ऊ जवाब ना देलस। ओकर करिअकी आँख अफसर के छीन, बिना चमक के मुखड़ा पर जमल रहल—ओकरा निस्तेज आँख में एक डर देखत रहल।

'काहे?"

ऊ चुप रहल।

"अबहीं तक त तूँ गोरिलन के संगे रहलू आ एकाएक एह गाँव में आ पहुँचलु, आखिर एकर वोजह का? तोहनी के दल में कायदा कानून ठीक से ना मनाए का? तोहरा हक में अच्छा होई कि सब बात साफ-साफ आ साँच-साँच बता द कि काहे खातिर तोहरा के लोग एह गाँव में भेजल हा।"

'हम अपना मन से अइलीं हाँ। हम अब जादे रह ना सकत रहीं।"

'ना रह सकत रहु बाकी काहे' ओकरा जाने के अबरू चाह जाग गइल साइत तोहरा लोग के हालत खराब रहे, काहे कि तोहार कमाण्डर पिछला चढ़ाई में मारल गइल रहे। का तोहनी के टुकड़ी तूर दिआइल?'

"हम टुकड़ी के बारे में कुछो नइखीं जानत, हम घरे चल अइलीं।"

"बाकी काहे, एकाएक असही?'

ओकर ओठ हिलल बाकी कवनो आवाज ना भइल।

'का तू तय क लेलू कि ई सभ ना समझी, अपराध, डकैती आ लूट रहे आ एही से तू ऊहाँ ना रहे के चाहत रहू?'

ऊ आपन मुँड़ी हिला देलस "ना हम ऊहाँ जादे ना ठहर सकत रहीं।"

"बाकी तू काहे ना ठहर सकत रहू?"

काफी जोर लगा के ऊ सोझे कहलस कि "हमरा लइका के होनहारी बा एही से अइलीं हाँ।"

"का? का?"

"हम बच्चा पैदा करे खातिर घरे चल

www.bhojpurisahityangan.com

आइल बानी"

"ओह ! अइसन बात बा"

ऊ खूब जोर से हँस परल। अइसन कि ओकरा आवाज से ऊ मुड़ी से गोंड़ तक सिहर उठल।

"का तोहरा जाड़ लागता" ताना मार के ऊ कहलस "ई जगह त गरम बा, तू गठरी बनल जात बाड़ू जइसे बाहर पाला में होख। आपन साल हटा द।"

एकदम हुक्मी बंदा नीयर ऊ आपन मोटा भारी शाल उतार के बेंच प ध देलस।

"आपन कोट उतार द।"

ऊ पहिले छन भर खातिर थथमल्ह आ तब अपना भारी जैकेट के बटन खोल के हटा देलस।

ऊ गौर से देखलस, "हँ, एह में सक ना कि गरभ के ई आखिरी महीना रहे।"

ऊ मेहररूआ जोर से साँस लेत रहे। ऊ समुझलस कि ओकरा खड़ा रहे के कोरसिस कइला से अइसन हो रहल बा, तब्बो ऊ जान-बूझ के पिनसिन घूमावत, रह-रह के गते-गते सवाल करत अपना काम में लागल रहल।

ओकरा बारे में जे भी सवाल भइल जात रहे ओकर जवाब ऊ जल्दी से दे देत रहे। हाँ ऊ बिअहल रहे, ओकर पति लड़ाई में माराइल रहे। उलटन भईला का पहिले ऊ एगो जिमदार कीहाँ गेहूँ काटे आ गाय दूहे के काम करत रहे। उलटन (क्रांति) का बाद ऊ एगो सामूहिक खेती में काम करत रहे। जसही गोरिलन के संगठन भईल ओह में ऊ सामिल हो गइल बाकी अपना हालत के छिपवले रहल। जब यह तरह रहल दूभर हो गइल—असक हो गइल आ प्रसव के बेरा आ गइल तब ऊ गाँव में आ गइल। ऊ सान्ती के साथ बच्चा पैदा करे के चाहत रहे।

"अइसन ! सान्ती से बच्चा पैदा कइल....." ऊ कुटकी के साथ दोहरवलस। "बितल का हफ्ता में तू एगो पुल उड़ा देले रहू ?"

"हाँ, हम उड़वले रहीं।"

"के तोहरा के मदति देले रहे।"

"केहू ना, हम अपन ही कइले रहीं।"

"तू झूठ बोलत बाड़ू। हम सब जानत बानी अच्छा होई कि साफ-साफ कह-द।"

"केहू ना, हम खुद कइले रहीं।"

"अच्छा बात बा, अब गोरिला कहाँ बाड़न स।"

ऊ चूप ओकर करिया आँख अफसर के चेहरा के सान्ती से देखत रहे। ऊ लामा साँस लेलस। उहे कथा बार बार, उहे हठ, उहे चुप्पी आ ऊहे पूछ-ताछ। ओकरा से कुछ जान लेवे खातिर हर तरह के हो सके वाला उतजोग कइल गइल। सब बेअर्थ। ऊ जानत रहे कि ई लोग चाहे त सब बात साफ-साफ ओसा के कह देला ना त उनका इच्छा के खिलाफ कुछुओ जान लेल अनहोनी ना त कठीन जरूर बा। एह बेरी ऊ पहिले का मिलल जवाब से भरम में पड़ गइल बाकी ओकरा चेहरा पर उमड़ल लकीर देख के पहिलही जे ऊ आपन खिआल बना लेले रहे, से सही निकलल। अपने बारे में ऊ सब बात करो—सब कुछ कही लेकिन दोसरा का बारे में कुछ ना।

"गाँव में आवे का पहिले तू कहाँ रहू ?"

ऊ गुमसुम।

ऊ बेचैन होके अपना पिनसिन के टेबुल पर ठकठकावत रहे—ओह औरत के देखले बिना। निरास थकावट के एगो लहरा ओकरा पर दउड़ गइल।

"कतना अच्छा होइत कि एह मन ना लागे वाला काम के केहू अवरू आदमी के सँउप के हम पुसिया का भीरी चल जइतीं,". ऊ सोचलस। लेकिन गोरिला जे उत्पात जिला भर में मचवले

(बाकी ३२ पन्ना प)

www.bhojpurisahityangan.com

किसान

श्री मदन

बाबा हो सूरूज बाबा आग बरिसाव ताड़े,
धरती जरतबाड़ी तावा के समानावा।
सन-सन-सन रामा पवन चलत बाटे
हर-हर-हर चुवताड़े तनसे पसेनवा।
तबहूँ किसान भाई हरवा जोतत बाड़े
काहे दोनी आपन सुखावताड़े प्रानवा।
कवन लालाचवा में आँचवा बनत बाड़े
दुखवा से देही के जराव ताड़े चामवा।
ठीक दुपहरिया में रोटी लेले पहुँचेली
नाव नईखी जानत हई इन्ही के जनानावा।
सूखल-पाकल रामा रोटिया बनल बाकी,
भर पेट खाईके अघाई गइले मनवा।
छहर-छहर रामा मेघवा गिरतबाड़े
घहर-घहर घहराला आसमानावा।
कड़-कड़-कड़ रामा बिजुली करेला माना
जनि जाहु तुहुँ कहीं बाहर मयदानावा।
तेहू प किसान लोग लागातार करे काम
नाहीं देले तनिको सरीर के आरामवा।
बाहर निकलल रामा मउअत भइल बाटे
कुछुओ ना लउकेला आँखिके सामानावा।
सिनावा पड़ेला जइसे मेघवा गिरेला तइसे,
ताकाला प लउके ना फेंड़ वो बाथानवा।
जाड़े बाजत रहे दाँत हिले जइसे पिपर पात
तबहूँ दोवरिये धोती ओढ़ेले किसानावा।
रात के किसान भाई खेतवा पर जागस जाई
लोभ कइसन हइन इन्हकर त्यागे नाहीं मानावा।
रोज करस मेहनत काड़ा सहताड़न गर्मी जाड़ा
इन्ह के से जिअ ताड़े सकल जहानावा।

इति

www.bhojpurisahityangan.com

ओझइत

[श्री ब्रजनन्दन सहाय]

हमनी के देहात में ओझा सब के बड़ी परचार बा। ओझा लोग गुनी कहाला आ एह लोग के गुन के अइसन कदर होला कि बरनन ना कर सकीं। जे ओझा हो गइल ओकरा अब गांजा, भांग आ तपावन के कवन दलिदर बा, रोज एगो ना एगो मूला फँसले रहेलन आ फेन त इसिट लोग के माँग बढ़ले जाला। गांजा एगो अइसन लिपची अवला चीज बा कि आज के जवानन्ह में एकर खूबे महबरा बा, बाकिर पइसा त बा ना कि किन के पीअसु त चट दे बिना हरे फिटकरी के ओझा बनि गइले। एकाध जगे अन्हरचटकी लगा देले फेन त अस चलता ओझइत बनि गइले कि कुछ कहे के ना। जेने देखीं ओनहीं आठ जाना घेरले बाड़े जौना में दू जाना भूत झरवावे अवला होइहें त चार-छव जाना आदत झरवावे अवला काहे कि ओह गंजवा के लिपिच से कुकुर निअन त ढेर जाना धइहें।

एक दिन असहीं जाड़ा के दिन रहे आ हमनी के दस आदमी एके जगे बइठ के कउड़ लहका के तापत रहींजा। ओहिजे हमरा गांव के सबसे चलता ओझइत भूलन ओझा बइठल रहन तले अतने में एगो चमार धावल आइल कि जेल्दी चल हमरा माई के भूत धइले बा। अब त हमनी के सभ केहुए अकबका गइलीं जा, तले भुलन ओझा कहतारे कि काहाँ धइलसा रे? केने गइल रहे? तब उ कहता कि दादा ओही बुढ़वा पीपरा त गइल रहे आ ओहिजे से आइलि हा; तब से कुछ बोलते चालत नेइखे। भूलन ओझा मूँड़ी हिला के कहतारे कि हूँ, काल से त भेट हो गइल बा, ओह प एह घरी परेत के बास रहता। हमनी के त चिहा के भूलन ओझा के मुँह ताके लगलीं जा आ सब केहू एके साथे उठि के चल देलीं जा। हम ठीक भूलन ओझा के पीछहीं रहीं। थोड़ही दूर गइलीं जा त राहे में एगो टोपरी में बड़ ललकी मरिचाई फरल रहे, बस भूलन ओझा टप से चुपे एगो मरिचइआ तुर लेले। अउर कोई त ना देखल बाकिर हम देख लेलीं आ गुनी महराज ताबरतोर चुटकी में मरिचाई मींजे लगले। हमरा बाड़ा ताजुब भइल कि मरिचाई काहे के मींजता।

ओकरा घरे जब पहुँचलीं जा त देखीं कि मारि गुनी के थाहे नेइखे। कुल्ह जाना जुगुती लागा के थाकि गइल रहन बाकि ऊ ना कबजा में आवत रहे। भूलन ओझा के पहुँचते सब कोइ उन्हुंका के देखे लागल कि कइसे भूत के छू मंतर करि देलन्ह। भूलन ओझइत एक बे अचानके ठठा के हंसले जौना से सभ केहुए डेरा गइल बाकिर एगो गुनी कहता कि देव आ गइले, अब चुप रह लोग।

भूलन ओझा फेन चिघाड़ि के कहले— बस, जरा सा हाथ से छूअलीं कि बोले लागी बाकिर बोल काताना देतारे? तीन भ गांजा आ दू बोतल तपावन लागी, इहिट के खिआवे के कहु त ओकरा से काम लिहीं आ भूत के जारि के बिग दीहीं।

ओकरा घर को सभ रोवे लगले स कि हँ ए दादा जल्दी भगाव। बस भूलन ओझा का कइले कि उहे मरीचा अवला दूनों अँगुरी चट दे ओकरा

www.bhojpurisahityangan.com

आँखि में ठूस देले, अब त ओकरा तितिकी लेस देलस आ लागलि चिचिआए कि अब ना ए दादा, जान छोड़। सभ लोग भूलन ओझा के मंतर प गुम हो गइले तले भूलन ओझा फेन तड़प के कहतारे कि भाग तारे कि ना, बोल? ई कहि के फेन अँगुरी आँख देले ले चलले।

डरे त ओकर इमान काँप गइल आ लागलि कहे कि अब जाइब ए दादा, जान बकस द।

सबलोग खूब तारीफ करे कि अइसन ओझा चाहीं कि छूअते कायल क देलस बाकिर हमरा त भीतर-भीतर हँसी छूटत रहे। ओह दिन भूलन ओझा पाँच गो रोपेआ बनवले आ चलि देले। हम मन में कहलीं कि इहे ओझाई ह तब त हमहूँ बाड़का ओझा बनि जाइब। बिहान भइला ऊ मेहररूआ भेंटाइल त हम पूछलीं कि कइसन लागत रहे त कहतिआ कि बबुआ! कुछ हाल मत कह जसहीं ओह पीपरा त गइलीं त बुझाइल कि हाहास बान्ही के कौनो चीज ओही प बइठ गईल बस ओकरा बाद त हमरा जेह डर भइल कि घरे जात-जात ले बोले के मने ना करे आ करेजा धड़-धड़ मारे। कुशल रहे कि हम टोकले ना रहीं नाहीं त ओहिजे जान मारि दिहित चाकिर गुनीओ के हाथ में कुछ बा। इहे जानि जइह बबुआ कि जइसे हमार लिलार छूअलसि कि बुझाइल कि आँखिए फूटल। बजिन्स हो मरिचा निअन लहर आँख में देबे लागल आ सउसे महमंडे फाटे लागल। ओकरा छूअत कहीं कि हमार डर त ना जाने केने भागि गइल बाकि ओझइत के हाथ के अइसन आगि ह कि अबहीं ले आँख लहर देता। भूलनो ओझा हमनी खातिर दइबे बाड़े।

हम कहलीं कि लीं ना, अब एह से बढ़ि के का चाहीं कि धरत-धरत में ओतहत बड़ परेत के मारि के गिरा देल स।

❀❀

(२९ पन्ना क बाकी)

रहन स ऐकरा बारे में ओह औरत से कुछ जान लेबे के ऊ चाहत रहे। ओकरा अपना मातहतन का अकिल भा चतुराई पर भरोसा ना रहे। एकरा अलावे ओह लोग का एगो दूभासिया पर भरोसा करे के पड़ित—जेकरा एह भासा के गेआन कम रहे आ तेजी के भी कमी रहे। ऊ खुद एह भसन रसियन आ यूक्रेनियन के पंडित रहे। ऊ एह भूमि में कवनो दोसरा काम खातिर सिच्छा पवले रहे, बाकी भासा के जानकारी में जे ऊ समय लगवले रहे ऊ लड़ाई के समय बड़ा काम के साबित होत रहे।

"ऊ लोग कमांडर के कालीं कहेलन बाकी ऊ त उपनाम ह। "उनकर असली नाँव का ह?"

ऊ चुप्पी सधले रहे। ऊ देखलस कि ऊ बहुत थाक गइल रहे, ओकरा मुँह के दूनों ओर के गहीड़ लकीर अबरू गहीड़ हो गइल रहे। ओकरा बगल में लटकत ओकर बाँह काँपत रहन स।

"तूँ बोल बू कि ना।" ऊ डांट के पूछलस अचके में ओकरा बुझाइल कि ऊ खुद भी थाक गइल बा। ऊ सोचलस—"आह! अच्छा होइत कि हम एह झंझट के छोड़ के घरे चलतीं। का पुसिया जागल होई कि हमरा गैरहाजिरी में ऊ सूत गइल होई?"

बाकी पुसिया अभी सूतल ना रहे। ऊ आपन कपड़ा बदले, सजावे आ सीसा का सामने रूप देखे में बितवलस। (क्रमशः)

www.bhojpurisahityangan.com

गोड़ के धोवन

[विप्रजी' कमला प्रसाद मिश्र]

महाराज के बेटा भइला के सन्तिर मदन जी का मन में बड़ी भारी मइ रहे। एक त महराज के बेटा, दोसरे एक लउत आ तिसरे जरला बन बुढ़ापा के जनमल। लइका छेहर रहला पर के जवन हाल रहे तवन रहबे कइल सेयान समरथ हो गइला पर बियाह का बाद भी उहाँ के सोखई सरग में ठेकिए के दम लिहलसि।

महतारिए बाप का नाहीं बलुके परजा पवन का भी पुरहर उमेद रहे जे बियाहवा भइला पर मदन जी का गरमी में जरूरे कुछ नरमी आइ। बाकी-बानि त बड़ी बेकारि ठहरलि। पहिलिए राति में मदन जी का फुलकुँवर से महले में सान के सुरुकउअल हो गइल। तोरे मोरे होत-होत मदन जी के हाथ भी छुट गइल। रोस के जोस त जहर उगिलबे करेला बाकी कुहुकत करेज भी अँगार नाहीं त लुती जरुरे उड़ाइ के दम लेला। सुसुकते-सुसकत फुलकुँवर कहि दिहलीं जे अतना गुमान रहल हा तब अनारकली रानिए के काहें ना जीत ले अइलीं हाँ!

डंभ बरला पर आदमी आन्हर हो जाला। मदन जी महल के मेहना सुनि के अधमरल साँप मतिन बेमत हो गइलीं। ओह सूर में महतारी बाप से पवलग्गी चिरंजी भी भोर परि गइल। पह फाटत कहीं कि तड़ाक से तड़के उहाँ का चटपट चाभुक उठा लिहलीं। कोड़ा लागत कहीं कि घोड़ा पवन से बाजी लगाइ दिहलसि।

बहकल "मन" का मइ से बुधि त पहिलहीं बांवति रहे, महल के मेहना कोना-अंतरा का बाँचलो खोंचलि बुधि के बँड़ेरा बना देले रहे। घोड़ा से उतरत कहीं कि मदनजी मारि मुँगरिन अनारकली के घंटा, अधेराति खानी बहराइ के धइ दिहलीं। अनारकली अकुताइले उठि के अभी सोचते विचारत रहली तबले लउँड़ी मदन जी के सनेसजनवलसि। ओह राति त दरबार का ओर से मदन जी के बड़ आदर भइल बाकी बिहान भइला अनारकली का जवाब में चुकला पर उहाँ का जेहल में बिराजे लगलीं। कमल का फूल मतिन मुँह सुखि के अमचुर हो गइल। पहिले त बड़ि उच्छावनि बुझाइलि बाकी कुछुए दिन का बाद एक दोसरा के देखि के इचिका सबुर होखे लागल।

संजोग से ओह नगर में एगो सेठ किहें बड़ि सजहनि बरिआति आइलि। बरिआति देखे खातिर कैदी कुमार लोग अनारकली का बाबू जी किहें आपन अरदास भेजलीं सभे—राजा जी के दिल दरइ गइल। सांझ होते सिपाही लोग कैदीकुमार लोग का डांड़ में डोरि लगवले बरिआति देखावे के ले गइल लोग। अवरू लोग त बरिआति देखि के बेबद रहे बाकी मदन जी त महावत का मुँह पर आँखि गड़ाइ के काठ के मूरति हो गइल रहलीं।

बिलारि का भागे सिकहर टूटल। मदन जी का भाग से महावत का पियास लागलि। पिलवान का हाथी पर ले उतरत कहीं कि पटाक देनीं मदन जी अकुताई में के खरहेटलि दुइ गो चिट्ठी उनुका हाथ में धराइ दिहलीं। पिलवान दुनों चिठियन के लेइ त अइले बड़ा जतन से बाकी अन पढ़ रहला से उनुका अन्हपट लागि गइल। राजा वाली चिट्ठी के लउड़ी से महल में भेजवा दिहले आ दुलहिन वाली राजा जी का हाथ में दे अइले। चिट्ठी पावल कहीं कि राजा जी कपार धइलीं जे बेटा सनकि गइल नाहीं त हमरा के लुगी-पाजी काहें लिखित! फूलकुंवर का त कुलिहए

www.bhojpurisahityangan.com

मरम मालुमे रहे तवना का बाद चिठिया देखि के अदल-बदल के बात भी समुझ में आइ गइल। चिट्ठी पाइ के फूलकुँवर नइहर पहुँचावे के सवाल डलली। अपने माथे पतोह पहुँचावल राजा खातिर मरनि रहे बाकी अन्त दाव में जिअति मांछी लिलहीं के परलि।

अनारकली के सवाल त फूलकुँवर से मदन जी के चिठिए बताइ देले रहे, काम रहि गइल रहे जवाब के। अपना बाबूजी का दरबारी लोग से जवाब भी सहज में मिल गइल। तब पुछहीं के का। देवी का दरसन का बहाना से दस दिन के छुट्टी भी आनने फानन में मिल गइलि। ओह समे रेल, मटर आ उड़नी जहाज त रहे ना, सब केहू पालकी, घोड़ा आ पैदल का अलंम से देवी का दरबार में पहुँचल। सब कर मन देवी जी का दरसन में लागल आ फूलकुँवर जी के मन मदन जी का दोहमत में भटके लागल।

मन महटिआवे का बहाना से एक दिन फूलकुँवर मरदानी पोसाक पहिर के बाहर निकलली। थोरही दूरि गइला पर छोड़ा का कड़कत कोड़ा लागल आ घोड़ा हहासि बान्हि के हवा हो गइल। घंटा घहराते मातर लउँड़ि, दरबार आ महल में हाल पहुँचवलसि। फूलकुँवर फूल सिंह का भेस में अनारकली के उतारा देवे खातिर दरबार में दाखिल भइलीं। दरबार में आवते मातर अनारकली आपन सवाल पेस कइली, :—

अनारकली, :- "संसार में सब से उत्तम केकर संतान बाटे ?"

फूल सिंह, :— "गऊ के। बेटा भइला पर धरती फारि के अन्न उपजावेला आ बेटी भइला पर आपन करेज दुहवाइ के जगके रइछा करेली।"

अनारकली, :— "संसार में सबसे उत्तम फूल कवन होला" ?

फूल सिंह, :— "कपास के। कपास का रुई से बनल बहतर से लाज भी बांचति बा एकरा अलावे अंग भी तोपात बाटे।"

अनारकली, :— "पत्ता कवन उत्तम होला" ?

फूल सिंह, :— "पान के। अमीर उमराँव लोग अपना खाए खातिर सज से जोगवे ला लोग आ गरीब भी संचि के देवता पर चढ़ाई देला।"

तिरसका सवाल के जवाब खतम होत कहीं कि अनध बधाव बाजे लागल। दोसरा दिन फजिराहे फूल सिंह जी बिदाई मंगलीं। दानदहेज का अलावे कैदी कुमार लोग का कतारि में से मदन जी का भी टहलुआ बनि के जाए के मोका मिलल। अधे पेंड़ा में दानदहेज के बत्तुस का संगे छुट्टी पाइ के बेगरिहा लोग अदबुद हो गइल। मदन जी का अबहीं तक कुछ मिलल त ना रहे बाकी मिठाई खात-खात मन उबिठ गइल रहे।

बेगरिहन का लबटला पर आगा अनारकली के सवारी, बीच में घोड़ा पर चढ़ल फूल सिंह आ पाछा ले मदन जी जल से भरल लोटा हाथ में लटकवले। मदन जी का लागलि पियासि आ फूल सिंह का गरमाइल गोड़ धोवे के धून्ह। हाथ में जल त रहे बाकी गुलामी-गुलामिए ठहरलि मदन जी के पियासे प्रान निकले लागल।

आगा जाइ के एगो आम का फेड़ तर फूल सिंह जी फुलही छिपुली में आधा जल से आपन गोड़ धोइ दिहलीं। मदन जी जसहीं छिपुली उठाइ के अपना ओठे ठेकावे के चहलीं तबले फूल सिंह का जगह पर फूलकुँवर खड़ा होइ के हाथ धइ लिहली। छिपुली के जल छपाक से गिरि के सरम का मारे सनाक देनी धरती में समाइ गइल। मदन जी के आन त अँउँधि गइल आ मइ (घमंड) माटी में मिलि गइलि बाकी आधा लोटा जल से कइसे जान काएम रहि गइल। जान बंचला का अलावे उहाँ का अनारकली अस रानी भी मिलि गइली। बाकी फूलकुँवर मदन जी अस देव से मुँह मोर के अहलदिल से देवी का चरन में लीन हो गइली।

www.bhojpurisahityangan.com

—:* आशा *:—

[श्री जगदीश ओझा 'सुंदर' साहित्यरत्न]

जवानी के सवेरा के पहिला घरी में, आशा अउरि रमेशी का भेंट भइल। दूनो एगो दूसरा के देखलनि। आँखि मिललि छने भरि में दूनो नजरि दूनों का मन में समा गइलि—रमेश चलि गइल। आशा जइसें के तइसें खड़ा रहलि। अपना मन का दुनिया में, कुछु जोहति। ओकरा कुछु ना बुझाइल जे रमेश बाड़े कि गइले। रमेश त ओकरा मन में रहलनि आ आँखि नीचे कइके जइसे मने में उनुके देखति रहे। अइसें त बहुत बेरि रमेश बाबू से देखा-देखी भइल रहे बाकिर एह बेरि के देखला में कुछु विशेष बात हो गइल। आशा ओही के विचार करे लागलि। तबले त एक, दुइ, तीन थप्पड़, भउजाई के, आ कटकटाइल बोली—

"मुँह करिखही, अबहीं ले चउका ना लगवले, कुलि बरतन जूठे परल बा अउर एइजा तोरा नजरि-बाजी सूझलि बा ?"

आशा कुछु ना बोललि, रोआईओ ना निकललि, खाली आंसू के तीन चार बून्द निकलल। जइसे मोती झरत होखे। आगा-आगा भउजाई, पाछा-पाछा ननदि आशा।

तब से आशा बराबर देखलसि कतने बेरि माघ फागुन आइल। आम के पेड़न में मोजरि लागल। मधु चूवलि। कली खिलखि। भौंरन के गीत भइल बाकिर आशा का बड़ी-बड़ी रतनार आंखिन में सालो भरि सावने रहि गइल। भउजाई का चुपे-चुपे, कबे बहारन फेंके का बहाना गांव में निकलि जाई आ कईसहूँ एक बेरि रमेश बाबू के देखि लेई बस इहे एगो ओकरा जीवन के नेम रहि गइल।

बरिस पर बरिस बीतत गइल। आशा के कुलि सखियन के बिबाह हो गइल। बारात आइल। मंगल गीति भइल। आशा भी ओही में आपन सुर मिलवलसि। दुलहा के भरि आंखि देखलसि आकिर आपना मन में जवन तसवीर खिंचले रहे ओके आँसू से धोवते रहि गइल, ऊ साफ ना भइल। बहुत जगह त बुढ़िया ओके अपना दुलहिन का लगे ना जाए दस आंगन में ओकर परछाँही ना परे दस। सबका के माना करस जे ऊ आवे ना पावे। आशा का का लालूम रहे जे ऊ बिधवा ह। ऊ का जानति रहे जे कब ओकर बिआह भइल। कब चूरी फूटलि। के के मिलि के ओकर जीवन के ई खेलि खेलल ऊ का जानति रहे। बाकिर धीरे-धीरे ई कुलि ओकरा मालूम हो गइल। जिनिगी अउरि भारी हो गइल।

रमेश बाबू के भी बिआह होगइल। एक से दुई भइले। बड़ा सुन्दर जोड़ी लागल। दुलहा एम. बी. बी. एस. डाक्टर। दुलहिन बी. ए.। आशा के डोरी टूटि गइल-एह जीवन से उबि गइलि। अब ओकरा मालुमे ना होखे जे ओकरो एह दुनिया में केहू बाटे। दुख कहलो से कम होला बाकिर ओकर सुनही वाला के रहे ?

आधा राति सांय-सांय करति रहे। कबे-कबे गाँव के चउकीदार आ संगे-संग एगो-दुगो कुकुरो भूकि द स। हँ उरूआ आजु कई बेरि बोललसि। आ एक आध बेरि सियारिन के रोवला के आवाज भी आइल आ उहो गाँव का दखिने। जे सुनल उहे सांका गइल जे आजु गाँव में जरूरे केहू ई दुनिया छोड़ी। डाक्टर साहब सूतल रहलनि तबले त केहू जोर से बोलल—

www.bhojpurisahityangan.com

"डाक्टर साहेब ! डाक्टर साहेब !! ऐ डाक्टर साहेब !!! डाक्टर साहब चिहुकि के लिहाफ से मुँह निकलले तबले उनुकर पत्नी सुधा बोललीं— "आवाज आशा का बाबू जी के मालुम होता।

डाक्टर साहेब— "के ह ? रामप्रीत सिंह ?

"हँ ए डाक्टर साहब, तनी जल्दी नीचे आईं ?

"का बात ह, बाबू साहेब ?"

"आशा बेहोस हो गइलि बा डाक्टर साहब" राम प्रीत सिंह बोललनि।

"काहे, का भइल आशा का ?

तबले सुधा बोललि— "अबहीं आजुये हमरा आंगना आइल रहुवे। डाक्टर साहब जरूरी दावा ले के नीचे उतरलें आ रामप्रीत सिंह का संगे चललें। सुधा भी पाछा-पाछा चललि। डाक्टर साहब रोकते रहि गइले बाकिर सुधा ना मानलि कमे दिन में सुधा आशा के बहुत माने लागलि रहे। आशा भी तनिको छुट्टी पाई के ओहीजा चल जाई।

एगो छोट कोठरी। दिया टिम-टिम कइके जरि रहल बा, आधा अंजोर आधा अन्हार'। ओही का संगे-संगे आशा के जीवन दिया भी टिमटिमात बा। डाक्टर साहब पहुँचते देखले। आंखि के पलक उठा-वसु त लाल-टेस। डाक्टर साहेब चिहुकि के बोललें— "रामप्रीत सिंह ! आंखा त जहर खइले बा। रामप्रीति सिंह सन्न हो गइले काट त खून ना। गिड़-गिड़ाई के बोललें— डाक्टर साहब बचादीं हमारा आशा के जान; बाड़ा उपकार मानबि।

डाक्टर साहेब दावा दीहले। एगो-दुगो कय भइल। आशा के आँखि एक बेरि फेरि खुलि गइल चिहाई के साँइ साँइ बोललि—

"के ह, रमेश बाबू ! "आह बाबू तू अइल बाकिर चले के बेरि। अछा अब सुख से मरि सकबि। एतना कहला का बाद आशा के बड़ी-बड़ी आँखि हमेशा खातिर रमेश बाबू के छबि लेके बन हो गइलि।

डाक्टर साहेब के हाथ आसा का नवज पर रहे आ आँखि से आँसू के धारे बहत रहे।

सुधा आँसू भरल आँखि से कबे रमेश बाबू के देखे, कबे आशा के लाश।

गीत

[राम बचन लाल बी. ए.]

काँच कली तोरि-तोरि भरऽ झोरि हो !
कुम्हिलाइयो ना जाय ।
धूरि झरियो ना जाय,
होइ देरियो ना जाय,
जस बाटे हार तोर, कलिया ना जोग मोर
तनि सेवकाई ई बिसारि जनि जाइ
तनि लेतीं अपनाइ,
रंग ना चटक होखे हलुके महँक होखे
लेतीं एके अपनाइ
काँच कली तोरि-तोरि भरीं झोरी जी
कुम्हिलाइयो न जाय
धूरि झरियो न जाय, होइ देरियो न जाय।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी बोंग

पटना के लोग का आज-काल्ह ढेर दिन पर अन्हर चटकी खेले के मोका मिलल बा। सचहुँ जब से ई दँइत बिजुली कम्पनी आइल तब से ओह नगर का रात के मजे ना मिलत रहे, बराबर अँजोरे रहत रहल हा। रामजी एक से एकइस करस बिजली कंपनी के नोकरन के जे सहरी भाई लोग के बतावल लोग कि अन्हार का कहाला आ एक से एकहत्तर करस बिजुली कंपनी के मालिकन के जे अइसन मोका ओह लोग के देल।

× × ×

कलकत्ता नगर भाई एगो जिनिसे बा। ओहीजा के खबर बा कि उहाँ के कारपोरेसन के सब नौकर मिल के करपोरेसन के काउन्सिलरन के कई घंटा तक ओही काउन्सिल घर में कैद कइले रहल हा लोग। भला अब ना बताईं जे का होई। मेमर लोग उहाँ गइल रहे मेमरी करे कि जेहल काटे। अइसनो कहीं होला कि पइसा द नात कैद करब। ई रोग त बड़ा खराब बा।

× × ×

सुने में आवत बा कि ई रोग पटनो में आ गइल आ इहाँ के बिजुली कम्पनी के नोकर लोग भी अपना इन्जिनियर के कैद क देले रहे। अब ना लीं। ई कवन बात भइल। ओह लोग का बने करे के रहे त बन करीत लोग बिजुली के मंत्री जी के त कुछ मजा भी आइत। बिजुली के मंत्री ना धरइते त मजदूर लोग का चाहत रहे अपने मिनिस्टर के कैद करे के। सुने में आवत बा कि उहाँ का बाड़ा छउकल चलत बानी आ तमाम देखत बानी कि काम ठीक से होता कि ना। भला अइसनो मिनिस्टर कही होला कि जेकर मंत्री ओही लोग के दुख के खिआल ना अबरू उलुटे मालिके का ओर मिल गइल बाड़े।

उहाँ के कहनाम बा कि ई जोर जबरदस्ती ना बरदास्त कइल जाई। बात बिल्कुल ठीक बा बाकी एहपर त खिआल करे के चाहीं कि बेचारा मजदूरन के का तकलीफ बा। बे हल्ला कइलेकेहू सुनवे ना करे। एह से ई राय कायदा के खिलाफ पड़त बा

× × ×

भारत के न्याय मंत्री काटजू साहेब न्याय में सुधार करे के फेर में बाड़े आ एकरे खातिर एगो बिल पेस करीहें। ई अजब बात बुझाता। भला न्याय में कवन सुधार होई। एह घरी के न्याय त खूब बढ़ियाँ बा। मुद्दई बेचारा के फरिआदे ले रह जाता ओकरा कवनो राह त मिलते नइखे आ मुद्दाले के दउरत-दउरत गोड़ के चमड़ी ले छिला जाता। बस लड़ते-लड़ते लोग के दुरदसा हो जात बा आ अन्त में मूल धन के दस गुना गँवा के घरे बइठ जात बा। हाकिमन का त फुरसते नइखे कि ममिला पर बिचार करस जब ढेर दिन बीत जाता तब कुछ अँट-सँट लिख देता लोग बस अब बढ़ि आगा मुहे। बताईं अब एह ले कवन नीमन न्याय होई। एह में त दूनो गोल के छरपटे छूट जात बा।

मदरास मुख मंत्री चक्रवती राज गोपाला चारी का एह बात के बड़ा दुख बा कि उनकर साथी लोग

www.bhojpurisahityangan.com

जे मद्रास विधान सभा के मेमर रले हा अब उनुका से अलगा होके आपन एगो अलगे आन्हर राज बनावल हा लोग। एह पर राजाजी का दुख करे के त कवनो बात ना रहल हा काहे कि सबाँग जब सेआन हो गइलन त ऊ अलगा होइबे करीहें। आ उनुका त जादे खुसी मनावे के चाहीं काहे कि भले आन्हर लोग उनुका मेसे निकल गइल।

× × ×

एक बेरा के. एम. मुन्सी साहेब अखंड भारत के नारा बुलंद कइलन ओकर नतीजा भइल कि राजेन्द्र बाबू खंडित भारत नाँव के किताब लिख देलन आ भारत खंड-खंड हो गइल। ओने केरल देस के भाई लोग एक्य केरल के हाला कइले रहल हा तले जवाहीर लाल जी एक्य भारत के नारा ले उठलन अब का होई। देखीं सभे जे अबको ऊँट कवना करवटे बइठेला।

× × ×

भोजपुरी समिति के महा मंत्री डाक्टर पी. गांगुली साहेब आरे में किसोर दल के सलाना जलसा कइले रहले हा जवना में लेकचर आ लेख दूनों के बदी रोपाइल रहे। ओह में जे कुछ भी इनाम एकराम रहे से सब बबुइये ले लेली स। बबुआ लोग ओहीजे बइठल रह गइल। एह न्याय में डाक्टर काटजू साहेब कवन सुधार करीहें। अपने राम अगर किसोर ना जवान भी रहीते त डाक्टर गांगुली के फाँड़ ध के पूछीते कि भले आदमी किसोर दल के मंत्री होके सब इनाम किसोरी लोग के काहे दिआइल। भोजपुरी के संपादक जी का सजग रहे के चाहीं कि कहीं भोजपुरी के भी इहाँ का कवनो बुढ़िया के ना देदीं।

× × ×

भोजपुरी समिति के सभापति बाबू रामायण प्रसाद एक एकड़ में ७१ मन गेहुम उपजा के भारत भरके रेकर्ड तूड़ देले बाड़े। अब जापानी ढंग पर चाऊर बो के जापानी रेकर्ड भी तूरे का फेर में बाड़े आ पछेआ उनका धान के सूता के उनकर रेकर्ड तूड़े का फेर में बा।

× × ×

भोजपुरी समिति के उपसभापति आ बाल हिन्दी पुस्तकालय के मंत्री बाबू ब्रजकिशोर बहादुर आज-काल सबेरे पुस्तकालय भाग आवताड़न। उनुको डर बड़ा भेअरनक बा। ऊ सोचत बाड़े कि कैद करे वाला रोगवा कलकता से पटना फट दे आ गइल त का ओकरा पटना से आरे आवत देरी लागी। त से ना होखे कि उनुको बिजली कम्पनी के आदमी कहीं उनुको के ना बन क देस। बाकी भागे का बेरा अपना श्रीमती जी के ऊहाँ का तनिको खिआल ना करीं।

× × ×

काश्मीर भी गजब जगहे बा। कादो दुनियाँ भर से खुबसूरत जगह ऊहे बा एह से ऊहाँ के सब काम अजबे होला। एक बेरा ऊहाँ शेख साहेब के चलल रहे त मार के जेने देखीं तेने शेखे साहेब लउकस। अब ऊ फेरू बड़े घर के सैर करे गइलन त आज काल्ह बक्सी साहेब के चल गइल बा। जेने देखीं तेने इनके नाँव लिआता। बक्सी जी के अपने राम सावधानी के बिगुल फूकत बाड़े काहे कि शेख साहेब का लीक प चल के बड़े घर चलजाये के पड़ी।

× × ×

वाह भाई, एकरा के कहल जाला मरदानगी पटना विश्व विद्यालय के फेकल्टी आफ आर्टस का मिटिंग में श्री अवधबिहारी झा जी कहलीं हाँ कि मैथिली के सवाल के आँख से अन्ह ना होखे के चाहीं काहे कि ऊ बिहार राज के आधा से अधिका लोग के मातृ भासा ह। बेसक झा साहेब बधाई। बाकी एक बात गलतो हो गइल बा उनका कहे के चाहत रहे कि

[बाकी पेज ४० पर]

www.bhojpurisahityangan.com

अपन बात

मातृभासा में सिच्छा

पटना विश्वविद्यालय के फेकल्टी आफ आर्टस् के हाल का बैठक में एफ. ए. आ बी. ए. खातिर हिन्दी का साथे ५० नमर के मातृ भासा के पढ़ाई भी जरूरी कइलस हा। पटना विश्वविद्यालय अपना एह फैसला खातिर बधाई के जोग बा। बहुत दिन तक हमनी का मन में ई धारना बन गइल रहे कि मातृ भासा के माने हिन्दी ह बाकी एने जब से हिन्दी राष्ट्र भासा भइल तब से भा एकरा आउर पहिले से भी एगो विचार चल पड़ल रहे कि भारत के संस्कृति के तब तक आदमी ठीक से ना समुझ सके जब ले गाँवन के ठीक से ना समुझ ली ही। एही में गाँव के गीत-मानर भा अवरू रीति-रिवाज के पढ़ाई भी आ जात बा। एकरा ओर खिआल जाते मातृ भासा के अरथ समुझ में आइल आ बुझाइल कि मातारी से जवन भासा में आदमी सब बात सीखे उहे मातृ-भासा ह।

पटना विश्वविद्यालय हिन्दी का साथे मातृ भासा के भी ५० नमर के सवाल राख के एह बात के कबूल कइलस कि मातृ भासा हिन्दी ना ह। एकबारन में जवन खबर छपल बा ओह से पता चलत बा कि मातृ भासा में मैथिली, बँगला वोगैरह समझल गइल बा। बाकी एह वोगैरह के माने का होई एकर जानकारी हमहन का नइखे। पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के हेड, डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद जी, मातृ-भासा के नाँव गिना देले बानी। उहाँ का बंगला, ओडिया, उर्दू नेपाली आ मैथिली के नाँव त लेलेबानी बाकी बिहार में सब से जबरदस्त भासा भोजपुरी के नाँव ओह में नइखे। आ जब भोजपुरी नइखे तब मगही खोरठा कुरमाली वोगैरह के कहाँ से होई।

एह सवाल के हमनी का दू देन्ह से देखे के बा। एगो त ई भइल कि अगर मैथिली मैथिल लोग मातृ भासा ह त भोजपुरी भी भोजपुरी लोग के भासा ह आ ओह में पढ़ाई होखे के चाही। एकर दोसर पहलु ई बा कि भोजपुरी में कुछ पढ़ावे लायक बा कि ना। हमहन का इहे बुझात बा कि ऊ लोग इहे कही कि भोजपुरी में कवन चीज पढ़ावल जाई? मैथिली के त साहित बा भोजपुरी में का बा। एकरा उत्तर में आसानी से कहल जा सकेला कि जन जीवन सँउसे साहित ह आ ओह में लमहर-लमहर बतुस पड़ल बाड़े स जवना के ओह लोग का भी पढ़ना बा जेकर नाँव आज साहित में बहुत ऊँचा हो गइल बा

साँच बात त ई बा कि आज जे अपना के ऊपर वाला समझ लेले बा आ ऊ सचहुँ ऊपर बा भी बाकी ऊ अतना ऊपर बा कि ओकरा नीचे के पते नइखे। गाँवन में अइसन अनेको सब्द बाड़न स जवन सब्द कोसन में नइखन स। ओह में ढेर अइसनो सब्द मिलत बाड़न स जवना के अरथ पढ़ल-लिखल लोग का नइखे बुझात। एह से हमार मतलब ई बा कि चीज त बड़ले बा लिखे के सवाल बा। लिखे खातिर बहुत समय के भी जरूरत नइखे। अगर ई बात तय हो जाय कि पढ़ाई ओही में होई त जब तक

www.bhojpurisahityangan.com

पढ़ावे के इन्तजाम होई तब तक किताब लिखा के छपा जाई।

एगो अवरू सवाल आई जवना पर विचार कइल जरूरी बा। ऊ ई ह कि किताब के इन्तजाम त ओकरे करे के पड़ी जे पढ़ाई। जेकरा पढ़े के बा ऊ त किताब नानु लिखी। अइसन त ना कबो भइल बा ना होई। आज जे किताब बाड़न स ऊकुल्हि त माहटरे लोग के लिखल हवेस तब आगे भी जवन किताब पढ़ल जइहन स तवन ऊहे लोग नु लिखी। एह से अगर विश्वविद्यालय कह दे कि भोजपुरी में पढ़ाई होई त लेखक लोग झट दे किताब लिख दींहन आ कोरसिस पर कोरसिस करे लागी लोग कि उनके किताब कोर्स में रखाव।

एह से आज का जवाना में ई सोचल आ अइसन सवाल उठावल ठीक नइखे जँचत कि किताब बा कि ना। आज त एके सवाल बा कि नीयत बा कि ना। अगर नीयत होई त हो जाई आ जदि नीयत ना होई त कबो ना होई।

हमनी का ई पता नइखे कि मैथिली के छोड़ के बिहार के अवरू कवनो भाषा के नाँव ओह में बा कि ना। हो सकेला कि अंग्रेजी में प्रस्ताव गढ़े वाला लोग का 'एक्सेट्रा' सब्द से काम चल गइल होखे आ ऊ लोग अवरू के नाँव ना देले होखे। ई हालत भी कवनो नीमन ना कहल जा सके काहे कि अगर नाँव ना देल रही त लोग के धेआन ओह ओर ना जाई। एह से हमनी चाहत बानी कि विश्वविद्यालय साफ-साफ कहो कि ऊ मातृ भासा के अरथ का बुझ-ले बा आ ऊ सब के मातृभासा खातिर ऊहे सुबहिता दी कि ना?

भोजपुरी का ओर ओकरा धेआन देवे के चाहीं। हमनी का पता नइखे कि मैथिली बिहार के आधा से अधिका लोग के भासा ह। बाकी हमहन ई जानत बानी कि भोजपुरी पचास हजार वर्ग मील में फैलल तीन साढ़े तीन करोड़ लोग के भासा ह आ भागलपुर, पुर्णिया, संताल प्रगना वोगैरह में बसल भोजपुरिहन के गिनती कइल जाई त सीधे चार करोड़ लोग के भासा ह। एकरा से अधिका कवनो भासा के बोले वाला बाड़न त दूनों बंगाल के मिला के बंगला वाला बाड़न। एकर ढेर दिन तक पूछ ना भइल ई बात ठीक बा बाकी अब एकरा के केहू टाले के कोरसिस करे त ऊ कोरसिस बेकार जाई। एकरा पासे आपन मूल धन बा। एकरा अपना सब्दन में अतना जोर बा कि एकर सब काम अपना सब्दन से चल जाई। तत्सम से उधार लेके आपन क्रियापद जोड़ के एकरा धनीक होखे के नइखे।

[३८ में का बाकी]

सउँसे बिहार मैथिलीय बोले ला एह से सब सिच्छा मैथिलीए में होखे के चाहीं।

हमार बिश्वनाथ बाबू भी कम बधाई के पात्र नइखन। ऊहाँ का मातृ-भासा के नाँव गिनवलीं जवना में बंगला, उड़िया, नेपाली, मैथिली, ऊर्दू सब आ गइल बाकी भोजपुरी कहत लाज लाग गइल। बाहरे भोजपुर के नयका बीर!

× × ×

पटना में एगो कागज के नया चाणक्य निकल आइल बाड़े। आज से अढ़ाई हजार बरिस पांहले एगो चाणक्य पाटली पुत्र में खून के नदी बहा के अपना चेला चन्द्रगुप्त के गद्दी पर बइठवले रहस। ई नयका चाणक्य खट-मिट्ठी के धार बहावे का फेर में बाड़े। देखी ई केकरा के उठावले आ केकरा के बइठावले।

www.bhojpurisahityangan.com

मैल का दुश्मन

सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ा धोवे
के विशुद्ध साबुन

केशरी सोप वो मार्का

बदन में लगावे भा चर्म रोगों
के नास करे वाला

जीवन सोप

सदा याद रखीं।

केशरी सोप फैक्ट्री, चौक, आरा।

प्रो० बसावन राम ऐण्ड सन्स, चौक आरा।

भैरव-मलेरिया खातिर

आ

टैरव-पिवरी, पिलही, लीवर

अउर

खून के कमी महला पर

जरूर सेवन करीं।

विहार-आयुर्वेद-भवन,

आरा।

भोजपुरी के अगिला विशेषांक

मनोरंजन-अभिनन्दनांक

चसमा-घर

जेल रोड, आरा।

महात्मा-प्रदत्त

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत जड़ी

एहि जड़ीक ३ दिनक लेप सँ उजर दाग पूरा नहिं हटय त मूल्य वापस। जे चाहथि एक आनाक टिकट पठाय शर्त लिखाउलेथि।

मूल्य ३) तेज दवा मूल्य ५)

हिन्द कल्याण औषधालय (६)
पो० कतरी सराय (गया)

छप गइल

कविवर रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के
कोइलिया के बाद दूसर गीत संग्रह

सितार

भूमिका—डा० उदयनारायण तिवारी

डबल क्राउन ११२+१६ पृष्ठ मूल्य २) डाक ।=)

पता—भोजपुरी कार्यालय, आरा।

मोती लाल एन्ड ब्रदर्स

जेल रोड आरा

MOTILAL & BROS., Book Binder

यहां पर हरेक किसिम का बाइंडिंग, रूलिंग और नम्बरींग का काम सस्ते दर पर होता है।

एकवार परीक्षा करें।

www.bhojpurisahityangan.com

Registered No. P. 777 Arrah, Sept., 1953.

'भोजपुरी' के संरक्षक

१ पंडित मुक्तिनाथ मिश्र, बिहार आयुर्वेद -भवन, आरा।
२ श्री रंगबहादुर प्रसाद, एम. एल. ए., सभापति, शाहाबाद जिला कांग्रेस-कमिटी, आरा।
३ डाक्टर पूर्णेन्दु प्रकाश गांगुली, नेत्र-चिकित्सक, जेल-रोड, आरा, मंत्री भोजपुरी-समिति।
४ श्री ब्रजकिशोर बहादुर, मैनेजिंग डाइरेक्टर, बिजली सप्लाई कम्पनी, आरा, उप-सभापति, समिति।
५ श्री अब्दुल कयूम अनसारी, एम. एल. ए. भूतपूर्व पुनर्वास-मंत्री, बिहार, पटना, ,, ,,
६ श्री महावीर प्रसाद झुनझुनवाला, चौक, आरा।
७ श्री कृष्ण बहादुर, एम. एल. सी. भट्टाचार्जी रोड, पटना।
८ श्री उदयराज सिंह, अशोक प्रेस, पटना।
९ श्री मुनेश्वर सिंह, अविलाख आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी, चटइयाबासा, पीरपैंती, भागलपुर।
१० श्री सत्यदेव प्रकाश, हरिजी के कोठी, आरा।
११ श्री ऋषभदेव पांडेय, १६० हरिसन रोड, कलकत्ता।
१२ श्री वशिष्ठनारायण तिवारी, डि० अ० कंट्रोलर, मिनिस्ट्री आफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज, कलकत्ता।
१३ श्री विपिन विहारी वर्मा, दीवान जी के शिकारपुर, चम्पारण।
१४ डा० रघुनाथ शरण, पटना।
१५ श्री मुरली मनोहर जायसवाल, बक्सर।
१६ श्री महावीर प्रसाद, बारिष्टर, महाप्रवक्ता।
१७ डा० गया प्रसाद, पटना।

-:॥ भोजपुरी के नियम ॥:-

१ 'भोजपुरी' हर हिन्दी महीना के पहिला हफ्ता में निकली।
२ 'भोजपुरी' जनता आ साहित्त के सेवा करी, अउर राजनीति के गुटबंदी से फरके रही।
३ एक सै एक रोपेआ देके केहू 'भोजपुरी' के संरच्छक हो सकेला।
४ संरच्छक लोग पत्रिका के जिन्दगी भर के ग्राहक मानल जइहें।

विग्यापन के दर

	पूरा	आधा	चउथाई	अठवाँ हिस्सा
टाइटिल पेज— चउथा	६०)	३५)	२०)	१२)
दुसरा	५०)	३०)	१८)	१०)
तीसरा	४०)	२५)	१५)	८)
मामूली पेज	३०)	१८)	१०)	६)

मैटर के बीच में—२५ o/o जादे।

गवरमेन्ट के विग्यापन—५० o/o जादे।

मुद्रक—संसार प्रेस, आरा।